डाक पंजीयन सं. जयपुर सिटी/101/2020-22 वर्ष : 08 अंक : 27 मूल्यः 5 रुपए पृष्ठ : 08

शिखर दृष्टि जीवन की... साप्ताहिक समाचार पत्र

हिलव्यू समाचार

जयपुर >> शुक्रवार, 07 जनवरी, 2022

R.N.I. No. RAJHIN/2014/56746

hillviewsamachar@gmail.com

महिलाएँ पत्रकारिकता में आगे आएंः गहलोत

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत सरकार के तीन साल पूरे होने पर पिंकसिटी प्रेस क्लब में 'प्रेस से मिलिए' कार्यक्रम में शामिल हुए

शालिनी श्रीवास्तव

जयपुर (हिलव्यू समाचार)। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत सोमवार को सरकार के तीन साल पूरे होने पर पिंकसिटी प्रेस क्लब में 'प्रेस से मिलिए' कार्यक्रम में शामिल हुए। अशोक गहलोत अपने चिरपरिचित अंदाज में मीडिया से रूबरू हुए। गहलोत ने कहा कि मैंने अपने जीवन में अलग तरह की राजनीति की है। मैं अपनी जिंदगी से संतुष्ट हूं, जो भी पब्लिक के लिए फैसले करता हूं। मुझे आनंद आता है। मंदिर मस्जिद गुरुद्वारे में अपने लिए नहीं पूरे ब्रम्हांड के लिए मांगता हूं। सबके कल्याण के लिए प्रार्थना करता हूं। प्रदेश की जनता को स्वास्थ्य लाभ देने के लिए चिरंजीवी योजना लागू की। इसी तरह से उड़ान योजना को उड़ान के रूप में ले जाने का सपना देखा है। इस योजना को कैसे आगे लेकर जाएं, इसके लिए मैंने पैडमैन फिल्म देखी, जबकि मैं फिल्में नहीं देखता।

सीएम गहलोत ने कहा चिरंजीवी और उड़ान योजना मेरी प्राथमिकता है। इन योजनाओं को ज्यादा से ज्यादा जनता के बीच लेकर जाए। इसमें किसी तरह की कोई राजनीति नहीं होनी चाहिए। उन्होंने उड़ान योजना को लेकर कहा कि मैंने हाल ही में पैडमैन फिल्म देखी है। उड़ान योजना उड़ान के रूप में ले जाना चाहता हूँ। कई लोग मुझे चाणक्य कहते हैं लेकिन मैं कोई चाणक्य नहीं हूँ। मैं सच्चाई के रास्ते पर चलता हूँ। सत्य का कोई विकल्प नहीं होता। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत कहा कि कोरोना काल में मैंने 560 वी सी की। सौ से ज्यादा कोविड को रिव्यू किया। बाकी गुड गवर्नेंस के लिए काम किया। जनता को कैसे सुशासन मिले, इसको लेकर दिन रात काम किया। वीसी के माध्यम से कम से कम 500 करोड़ रुपये की बचत हुई। गवर्नेंस मे कोई कमी नहीं आने दी। सरकार ने बेस्ट गवर्नेंस देने का काम किया है। वैक्सीन एक मात्र उपाय सीएम गहलोत ने कहा कि कोरोना से बचाव का वैक्सीन ही एक मात्र उपाय है। तीसरी लहर कैसी भी आए हमारे पुख्ता इंतजाम है। कोई कमी नहीं आने दी जाएगी। पूरी व्यवस्था की है। राजस्थान ने अच्छे ढंग से कोरोना मैनेजमेंट किया है। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने केंद्र की मोदी सरकार पर जमकर हमला बोला और उसे छापेमारी सरकार करार दिया। जब मोदी सरकार में विदाई होगी, तब लोग कहेंगे छापे वाली सरकार चली गई। गहलोत ने कहा कि मेरे भाई के भी छापे डाल दिए, हमारी सरकार गिराने की कोशिश की गई। कोरोना को लेकर मुख्यमंत्री गहलोत ने कहा कि वैक्सीन से बड़ा बचाव है। मुझे भी कोरोना हुआ था लेकिन मैं बच गया। मैं तीसरी बार सीएम बना हूं, आगे क्या होगा कोई नहीं जानता. गहलोत ने कहा कि मेरी जाति से मैं अकेला विधायक हूं, लेकिन फिर भी आप लोग मुझे मुख्यमंत्री बनाते हैं. मेरी इससे बड़ी पूंजी कुछ नहीं है। मैंने अलग तरह की राजनीति की हैं। पब्लिक के लिए जब में हित के फैसले करता हूं। तो मुझे बड़ा आंनद मिलता हैं। मुख्यमंत्री गहलोत ने कहा कि भारत सरकार राज्यों को मज़बूत करें, योजनाएं बनाएं, लेकिन उनमें राज्यों पर भार नहीं पड़े, कोरोना काल में हमारा राजस्व कम हो गया।

सरकार गिराने के प्रयास हुए: अशोक गहलोत ने भाजपा पर निशाना साधते हुए कहा कि मोदी-शाह ने राजस्थान में सरकार गिराने की साजिश रची। उन्होंने केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत का नाम लिये बिना कहा कि जब एक मंत्री की पोल खुली तो वॉइस सैंपल देने से मना कर दिया। ओवैसी और भाजपा में मिलीभगत के सवाल अशोक गहलोत ने कहा कि असदुद्दीन ओवैसी और भाजपा की मिलीभगत है। राहुल गांधी के हिंदुत्व वाले बयान का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि उन्होंने देश की राजनीति में नई बहस शुरू की है।

थानों का कल्चर बदलना चाहता हूं: कानून व्यवस्था के मामले पर विपक्ष के आरोपों पर गहलोत ने कहा कि इन आरोपों को मैं अस्वीकार करता हूं। हम थानों का कल्चर बदलना चाहते हैं और इसीलिए एफआईआर दर्ज करना अनिवार्य किया गया है, थानों में स्वागत कक्ष बनवाए गए हैं। जांच का तरीका भी बदला गया है। जब केस ज्यादा दर्ज होंगे तो अपराध का आंकडा तो बढ़ेगा ही।

देश में मोदी-शाह की सरकार, राज्यपाल मलिक ने अंडरस्टैंडिंग से दिया है बयान: मेघालय के राज्यपाल सत्यपाल मलिक के बयान पर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह के बारे में राज्यपाल सत्यपाल मलिक ने जिन शब्दों का प्रयोग किया है, वह उनका इस्तेमाल नहीं कर सकते। लेकिन उन्हें लगता है कि राज्यपाल सत्यपाल मलिक ने पीएम मोदी के लिए अंडरस्टैंडिंग के तहत यह बयान दिया है। उल्लेखनीय है कि मेघालय के राज्यपाल सत्यपाल मलिक ने कहा था कि पीएम से मिला तो पांच मिनट में ही मेरी उनसे लड़ाई हो गई, बड़े घमंड में थे। सीएम गहलोत ने आगे कहा कि अभी केंद्र में भाजपा या एनडीए की नहीं, बल्कि दो लोगों अमित शाह और नरेंद्र मोदी की सरकार है। ऐसे में बिना अंडरस्टैंडिंग के राज्यपाल मलिक पीएम के बारे में ऐसा बयान नहीं दे सकते।

हिलव्यू समाचार संपादक शालिनी श्रीवास्तव ने मुख्यमंत्री के समक्ष एक सवाल रखा जिसका संतोषप्रद जवाब नहीं मिल पाया...

महिला पत्रकारों को प्रोत्साहित करने के लिए आपके एजेंडे में उनके लिए क्या योजनाएँ या सुविधाएं हैं? पिछले कई सालों से आपके इर्द-गिर्द चिर-परिचित गिने-चुने पुरुष पत्रकारों के चेहरे ही बने हुए हैं नए लोगों को और महिला पत्रकारों को आप कब मौक़ा देंगे?

महिला पत्रकार बहुत कम हैं। आप आवाह्न करो कि महिलाएँ पत्रकारिता में आगे आएं तो आपकी भी शक्ति दुगुनी होगी। मुझे आप सब पत्रकारों से शिक़ायत है कि उस वक़्त आप लोगों ने कोई विरोध नहीं किया। जब हरदेव जोशी यूनिवर्सिटी बन्द कर दी गयी जो कि पत्रकारिकता की शिक्षा को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती। हमारी सरकार के जाते ही वह यूनिवर्सिटी बन्द कर दी गयी। हिंदुस्तान में पहला एक्ट ऐसा हुआ कि कोई यूनिवर्सिटी खुलने के बाद बन्द कर दी गई और उसके लिए उसके छात्रों ने कोई विरोध नहीं किया। धरना,प्रदर्शन,आंदोलन कुछ नहीं हुआ अगर सरकार की नाक में दम कर देते तो आज यह यूनिवर्सिटी अस्तित्व में होती। सरकार को अपना निर्णय बन्द करना पड़ता।

चिर-परिचित पत्रकारों से घिरे रहने वाली बात का कोई उत्तर नहीं मिला!

ख़बर-बेख़बर

नगर निगम जयपुर (ग्रेटर व हेरिटज) के पास अवैध निर्माणों को रोकने का समय नहीं! वह प्रशासन शहरों के संग में व्यस्त है-दोनों निगमों से मिला प्रतिउत्तर !

शहर में बढ़ते अवैध निर्माणों की बाढ़ लगातार जयपुर शहर के वास्तविक रूप को लील रही है और दोनों निगम अपने-अपने खोल में छिपकर बैठे हैं। लगातार बढ़ती शिकायतों और सूचनाओं को इस कान से सुनकर उस कान से निकाला जा रहा है। सर्दी का मौसम है हाथ की गर्मी को बढ़ाने वाले उपाय कारगर सिद्ध हो रहे हैं। कोई किसी वजह से चुप है कोई किसी वजन से चुप है।

इस सम्बंध में दोनों जयपुर निगमों (हैरिटेज व ग्रेटर) के भवन निर्माण शाखा (बिल्डिंग सेक्शन) से संपर्क करने पर ज्ञात हुआ कि अवैध निर्माण के फील्ड में जाने वाले जेईएन, गजधर या कर्मचारियों को ऑर्डर हैं कि फील्ड में नहीं जाना, प्रशासन शहरों के संग को सफल बनाना है! अतः यही कार्यालय में बने रहें।

अवैध निर्माणों को रोकने और उन पर लगाम लगाने के लिए दोनों निगम मुख्यालयों में सतर्कता शाखा का गठन किया गया था। जिसके मुखिया श्रीमान उपायुक्त (सतर्कता) होते हैं। इनका काम नियमित तौर पर संबंधित निगम क्षेत्राधिकार का दौरा कर अवैध निर्माणों को रोकना और अवैध निर्माण बाबत जनशिकायतों पर त्वरित एक्शन लेकर इनका ध्वस्तीकरण करना होता है लेकिन वर्तमान में सतर्कता शाखा, निगम के जोन कार्यालयों को अवैध निर्माणों के सीज़र के समय पुलिस जाप्ता उपलब्ध कराने तक ही सीमित है। रसूखदार अवैध निर्माण करने वाले बिल्डर्स से साज के चलते अनेक बार निगम जोन कार्यालयों के आग्रह के बावजूद सतर्कता शाखा या तो जाप्ता उपलब्ध ही नहीं कराती या फिर समय पर जाप्ता ही उपलब्ध नहीं होता। फलस्वरूप असली गुनाहग़ार बिल्डर्स रात-दिन निर्माणकार्य चलाकर निर्माण पूर्ण कर अवैध तामीरात का बेचान कर रवाना हो जाते हैं और ज्यादातर खरीददारों को वैध या अवैध निर्माण की जानकारी न होने या जन जागरूकता की कमी के चलते वो कानून के चक्रव्यूह में फंस जाते हैं और फिर उनका भी शोषण होता है। बड़ी रक़म देकर अपना काम निकलवाना उनकी मजबूरी हो जाती है और आखिर एक दिन इन अवैध निर्माण माफ़ियाओं की सज़ा मासूम लोगों को भुगतनी पड़ती है।

इसी धार के चलते अवैध निर्माण इस वक़्त चरम पर हैं। राजापार्क हो या चौड़ा रास्ता,छोटी चौपड़ हो बड़ी चौपड़,सी स्कीम हो या वैशाली,जवाहरनगर हो या मानसरोवर जयपुर की किसी भी कॉलोनी में घूम आइये अवैध निर्माण कर्ताओं के हौसलें बुलंद हैं और सरकार के वाशिंदें सोए पड़े हैं। रेजिडेंशियल प्लॉट्स पर धड़ाधड़ी से कॉम्प्लेक्स, मल्टी स्टोरी, जी प्लस,कॉमर्शियल एक्टिविज़ हो रहीं हैं और निगम-प्रशासन गहरी नींद सोया है।

यह लापरवाही शहर को किस मुसीबत की ओर ले जा रही है यह अभी नज़र नहीं आ रहा जब तक कोई बड़ी दुर्घटना नहीं होगी! फिर भले कॉम्प्लेक्सों,होटलों और रेस्टोरेंट्स,मैरिज हॉल की तरह एक दम नियम बना दिये जायेंगे आनन फानन में!!!!!

बढ़ती अवैध श्रृंखला शहर की शांति लील जाएगी एक दिन।

प्रदेश में 15-18 एज ग्रुप का वैक्सीनेशन शूरू

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। राजस्थान सहित पूरे देश में सोमवार से 15 से 18 साल तक के एज ग्रुप के किशोरों का भी वैक्सीनेशन शुरू गया है। राजस्थान का हेल्थ डिपोर्टमेंट इस एज ग्रुप की अनुमानित संख्या लगभग 53.15 लाख मान रहा है। केन्द्र सरकार ने ऐसे बच्चों की संख्या 46 लाख 51 हजार मानी है, जो रजिस्ट्रार जनरल ऑफ इंडिया की रिपोर्ट के आधार पर तैयार की है। राज्य में आज कुल 3456 सरकारी सेंटर्स पर वैक्सीन लगाने की तैयारी है। जिन बच्चों के पास आधार कार्ड, पैन कार्ड, राशन कार्ड या स्कूल का आईडी कार्ड नहीं है, वे अपने माता-पिता, भाई-बहन के आईडी कार्ड से रजिस्ट्रेशन करवाकर वैक्सीन लगवा सकेंगे। चिकित्सा मंत्री परसादी लाल मीणा ने बताया कि हमारा टारगेट जल्द से जल्द इस एज ग्रुप को वैक्सीनेट करने का है। उन्होंने कहा कि वैक्सीन का हमारे पास अभी पर्याप्त स्टॉक है और केन्द्र सरकार से मांग के अनुरूप हमे वैक्सीन मिलती रही तो हम इसी महीने के अंत तक इस एज ग्रुप को वैक्सीन की कम से कम एक डोज लगा देंगे। चिकित्सा विभाग के प्रमुख शासन सचिव वैभव गालरिया ने बताया कि राजस्थान में 10 जनवरी से स्वास्थ्य कर्मियों, फ्रंटलाइन वर्कर्स और 60 साल से ऊपर के एज ग्रुप के गंभीर रोगग्रस्त व्यक्तियों का भी प्रिकॉशन डोज का वैक्सीनेशन शुरू किया जाएगा। उन्होंने बताया कि 15 से 18 वर्ष आयु के समस्त किशोर (2007 या उससे पूर्व में जन्मे बच्चे) वैक्सीन लगवा सकते हैं।

15.82 लाख वैक्सीन का स्टॉक

विधायक रफ़ीक़ ख़ान के आदर्शनगर विधानसभा क्षेत्र में धड़ल्ले से हो रहे हैं अवैध निर्माण

शालिनी श्रीवास्तव

जयपुर (हिलव्यू समाचार)। राजापार्क, जवाहर नगर, आदर्श नगर आवासीय क्षेत्रों में भी अब अवैध निर्माणों की बाढ़ सी आ गयी है जैसे गल्ले खोल दिये हों भूमाफियाओं ने। नगर निगम ग्रेटर व नगर निगम हैरिटेज के सभी क्षेत्रों में अचानक अवैध निर्माण बढ़ गए हैं। जैसे 'मुद्दई सुस्त तो गधे चुस्त' वाली कहावत यहाँ चरितार्थ हो रही है। बिल्डरों,नगर निगम जोन,जोन उपायुक्तों व पार्षदों की मिलिभगत या गैर-ज़िम्मेदाराना नज़रिए व व्यवहार से इन रिहायशी इलाकों में लगातार अब कंक्रीट का जंगल पनप रहा है। जवाहरनगर में पुराने मकानों को तोड़कर ज़ीरो सैटबेक पर दुकानें व फ्लेट्स अवैध रूप से बन रहे हैं। आदर्श नगर, राजापार्क क्षेत्र में भी पुराने मकानों को तोड़कर अवैध रूप से कॉम्प्लेक्स, फ़्लैट्स, दुकानें बनाने का सिलसिला जारी है। क्षेत्र में रहने वाले नागरिक इन अवैध निर्माणों की अवैध गतिविधियों से लगातार परेशान हैं। ट्रेफिक जाम व प्रदूषण से जीना दुर्भर हो गया है। दोनों निगमों की यह लापरवाही लगातार शहर की खूबसूरती व सूकून पर ग्रहण का काम कर रही है। विधायक महोदय को ये ख़बर नहीं है यह थोड़ा संशय में लगता है। आख़िर शासन और प्रशासन के सारे वाशिंदें क्यों ख़ामोश हैं यह सोचने का गंभीर विषय है।

आवासीय क्षेत्र में भी अवैध निर्माण जारी....

राजापार्क, जवाहर नगर, आदर्श नगर आवासीय क्षेत्रों में अवैध निर्माणों की बाढ़!

नगर निगम ग्रेटर व नगर निगम हैरिटेज में आने वाले इन क्षेत्रों में अचानक अवैध निर्माण बढ़ गए हैं। जैसे 'मुद्दई सुस्त तो गधे चुस्त' वाली कहावत यहाँ चरितार्थ हो रही है।

बिल्डरों, नगर निगम जोन,जोन उपायुक्तों व पार्षदों की मिलिभगत या गैर-ज़िम्मेदाराना नज़रिए व व्यवहार से इन रिहायशी इलाकों में लगातार अब कंक्रीट का जंगल पनप रहा है।

क्षेत्र में रहने वाले नागरिक इन अवैध निर्माणों की अवैध गतिविधियों से लगातार परेशान हैं। ट्रेफिक जाम व प्रदूषण से जीना दुर्भर हो गया है।

दोनों निगमों की यह लापरवाही लगातार शहर की खूबसूरती व सूकून पर ग्रहण का काम कर रही है।

नगर निगम ग्रेटर व नगर निगम हैरिटेज में आने वाले इन क्षेत्रों में अचानक अवैध निर्माण बढ़ गए हैं। जैसे 'मुद्दई सुस्त तो गधे चुस्त' वाली कहावत यहाँ चरितार्थ हो रही है। बिल्डरों, नगर निगम जोन,जोन उपायुक्तों व पार्षदों की मिलिभगत या गैर-ज़िम्मेदाराना नज़रिए व व्यवहार से इन रिहायशी इलाकों में लगातार अब कंक्रीट का जंगल पनप रहा है। क्षेत्र में रहने वाले नागरिक इन अवैध निर्माणों की अवैध गतिविधियों से लगातार परेशान हैं। ट्रेफिक जाम व प्रदूषण से जीना दुर्भर हो गया है। दोनों निगमों की यह लापरवाही लगातार शहर की खूबसूरती व सूकून पर ग्रहण का काम कर रही है।

गली नं. 07 राजापार्क

गली नं.02 राजापार्क

मेन मार्केट राजापार्क

राम गली नं. 6 राजापार्क जयपुर

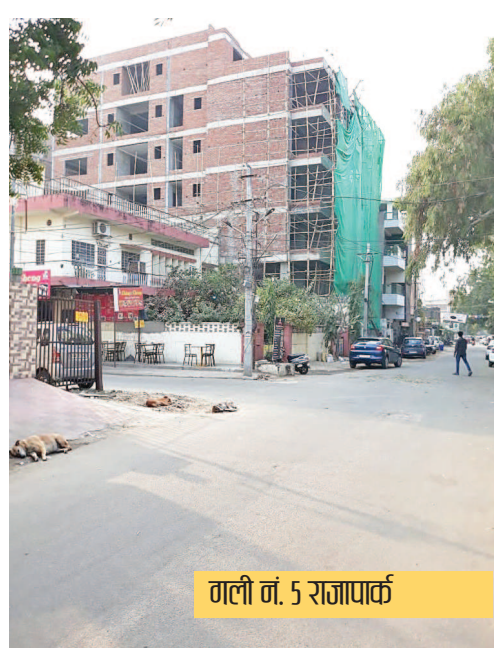

गली नं. 5 राजापार्क

hillviewsamachar@gmail.com

हिलव्यू समाचार

02

जयपुर >> शुक्रवार, 07 जनवरी, 2022

संपादकीय

विदेशी पूंजी के लिए अपने को आकर्षक बनाए रखने की चुनौती, ताकि ना हो पूंजी का पलायन

वर्ष 2021 के अंत में देश की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ दिख रही है। जीएसटी की वसूली बढ़ी हुई है। शेयर बाजार उछल रहा है। रुपये का मूल्य स्थिर है। तमाम वैश्विक आकलन के अनुसार भारत विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में सबसे तीव्र आर्थिक विकास हासिल करने वाली अर्थव्यवस्था बन चुका है, लेकिन साथ-साथ इसके सामने नई चुनौतियां भी उभर कर सामने आ रही हैं। जनता द्वारा कुल खपत अभी भी कोविड पूर्व के स्तर पर नहीं पहुंची है। ग्रामीण बेरोजगारी बढ़ रही है। वेतन की दरें गिर रही हैं। असमानता में वृद्धि हो रही है। प्रधानमंत्री ने स्वयं रोजगार को प्रमुख चुनौती बताया है। तीव्र विकास और घटते रोजगार के विरोधाभास की जड़ें हमारे आर्थिक विकास के माडल में हैं।

नीति आयोग द्वारा 2018 में रोजगार के संबंध में दो उद्देश्य सामने रखे गए थे। पहला, श्रम प्रधान उत्पादन को बढ़ावा दिया जाए। दूसरा, औपचारिक रोजगार को बढ़ाया जाए। इन दोनों उद्देश्यों में परस्पर अंतरविरोध है। जब हम रिक्शा चालक अथवा रेहड़ीवाले को औपचारिक रोजगार में ले जाते हैं तो उनके माल की लगत बढ़ती है। जैसे यदि हम नुक्कड़ पर चना भूजने वाले का पंजीकरण करके उसे फूड प्रोडक्ट आर्डर के अंतर्गत पंजीकृत चना बेचने को प्रेरित करते हैं तो उसे अच्छी क्वालिटी का लिफाफा लगाना होगा, दुकान का किराया देना होगा होगा। इससे उसके चने की लागत बढ़ेगी।

यदि छोटे उद्योग अपने कर्मियों का औपचारीकरण करते हैं तो उन पर न्यूनतम वेतन कानून लागू हो जाता है। श्रमिक का वेतन बढ़ता है तो उत्पादन लागत में वृद्धि होती है। अत- यदि हम औपचारिक रोजगार को बढ़ावा देंगे तो रोजगार समाप्त होंगे। रोजगार में वृद्धि हासिल करने के लिए उन्हें अनौपचारिक रखना ही जरूरी है। तब उनकी जीविका न्यून स्तर पर ही सही, परंतु चलती रहेगी। जैसे मान लीजिए नुक्कड़ पर मोमो बेचने वाले पांच ठेले वालों का औपचारीकरण करके इन्हें एक दुकान में ला दिया गया, जहां आटोमेटिक मशीन से मोमो बनाए जाते हैं। अब पांच के स्थान पर केवल दो रोजगार उत्पन्न होंगे। इन दो को वेतन अच्छे मिल सकते हैं, परंतु संख्या तो कम होगी ही। जो शेष तीन कर्मी बेरोजगार हो जाएंगे उनकी आय कम होगी ही। वे दूसरे स्थानों पर कम वेतन में अपना जीविकोपार्जन करने को मजबूर होंगे। इसलिए हम देख रहे हैं कि एक साथ शेयर बाजार बढ़ रहा है और बेरोजगारी भी बढ़ रही है। इसलिए हम औपचारीकरण का मोह छोड़ें और रोजगार की संख्या में वृद्धि हासिल करें। औपचारिक मृत्यु की तुलना में अनौपचारिक जीवन ही अच्छा है। नीति आयोग को यह बात समझाई जाए।

दूसरी चुनौती महंगाई की है। वर्तमान में ग्लोबल वार्मिंग के कारण तमाम प्राकृतिक परिवर्तन हो रहे हैं। कहीं सूखा तो कहीं अति वर्षा की मार पड़ रही है। इससे कई कृषि उत्पाद खराब हो रहे हैं। फलस्वरूप उत्पादन प्रभावित होने से महंगाई बढ़ी है। यहां भी आर्थिक विकास का माडल दोषी है। वर्तमान माडल में हमारा प्रयास रहता है कि हम सस्ता उत्पादन करें। जैसे थर्मल बिजली संयंत्रों को वायु प्रदूषित करने के मानकों में सरकार ने ढील दी है। उनके द्वारा आज सस्ती बिजली बनाई जा रही है। संपूर्ण उद्योगों में उत्पादन लागत कम आ रही है। बिजली संयंत्रों को वायु प्रदूषित करने की छूट न देते तो बिजली महंगी होती और उद्योगों में उत्पादन लागत ज्यादा आती। लिहाजा महंगाई बढ़ती, लेकिन उसी वायु प्रदूषण के कारण जलवायु में परिवर्तन आया है। सूखे तथा बाढ़ जैसी समस्याएं पैदा हुई हैं और टमाटर आदि के दाम बढ़ रहे हैं। इसलिए आर्थिक विकास के साथ महंगाई बढ़ रही है और आम आदमी मुश्किल में है। कारण यह है कि वर्तमान माडल में हम केवल सीधे लाभ को देखते हैं।

हाल में महाराष्ट्र के एक मंत्री ने कहा कि पर्यावरणीय आपदाओं के कारण जनता की क्षतिपूर्ति करने में सरकार को भारी व्यय करने पड़ रहे हैं। कहने का आशय यह है कि जब हम थर्मल संयंत्रों को प्रदूषण करने की छूट देकर सस्ती बिजली बनाकर आर्थिक विकास हासिल करते हैं तो उसी छूट के कारण प्राकृतिक आपदाएं आती हैं और हमें उसका मूल्य अदा करना पड़ता है, लेकिन अर्थशास्त्रियों द्वारा केवल सस्ती बिजली के लाभ को देखा जाता है और पर्यावरण के कारण जो अप्रत्यक्ष हानि होती है, उसे नजरंदाज किया जाता है। परिणामस्वरूप सस्ती बिजली के बावजूद आर्थिक विकास की दर पिछले सात वर्षों में लगातार घट रही है। कृषि उत्पादन में अनिश्चितता और महंगाई बढ़ रही है। 2022 की चुनौती है कि पर्यावरण रक्षा के उन उपायों को लागू किया जाए, जिनसे आर्थिक विकास की हानि कम और कृषि उत्पादन की हानि शून्य हो जाए। तब हम आर्थिक विकास के साथ-साथ महंगाई पर नियंत्रण कर सकेंगे और किसानों की आय में भी सुधार हासिल कर सकते हैं।

तीसरी चुनौती वैश्विक पूंजी के पलायन की है। वर्तमान में अपने देश के साथ-साथ अमेरिका में भी महंगाई दर बढ़ रही है। बीते समय में अपने रिजर्व बैंक की तर्ज पर अमेरिका के फेडरल रिजर्व बोर्ड ने भी मुद्रा की तरलता बनाए रखी है, जिसके कारण दोनों देशों में महंगाई बढ़ रही है। पर्यावरण के बाद महंगाई बढ़ने का यह दूसरा कारण है। अमेरिका में महंगाई पर नियंत्रण पाने के लिए फेडरल रिजर्व द्वारा तरल मुद्रा नीति को वापस लेने के संकेत मिल रहे हैं। यदि फेडरल रिजर्व ने मुद्रा का प्रचलन कम किया तो अमेरिका में ब्याज दरों में वृद्धि होगी। इन ऊंचे ब्याज के लालच में भारत समेत अन्य विकासशील देशों से पूंजी का पलायन अमेरिका को हो सकता है।

हम अमेरिका में ब्याज दरों की वृद्धि को नहीं रोक सकते, लेकिन अपने देश में निवेश को और आकर्षक बना सकते हैं, जिससे अमेरिका के ऊंचे ब्याज के लालच में हमारी पूंजी पलायन न करे। 2022 की चुनौती यह भी है कि देश अपने को विदेशी पूंजी के लिए आकर्षक बनाए रखे, जिससे पूंजी का पलायन न हो। यदि समय रहते हम इन चुनौतियों का सामना करने की रणनीति नहीं बनाएंगे तो जीएसटी की वसूली, शेयर बाजार में उछाल और सबसे तीव्र आर्थिक विकास के बावजूद हम पीछे रह जाएंगे।

सारा ने कर ली शादी, मांग में सिंदूर

सारा अली खान की सोशल मीडिया पर मांग में सिंदूर लगाए एक तस्वीर वायरल हो रही है. एक्ट्रेस मांग में सिंदूर लगाए नई-नवेली दुल्हन की तरह नजर आ रही हैं. इस तस्वीर को देखकर ऐसी अफवाहें उड़ रही हैं कि एक्ट्रेस ने सीक्रेट शादी कर ली है. इस वायरल तस्वीर में उनके साथ विक्की कौशल नजर आ रहे हैं. इस वायरल तस्वीर में दोनों एक साथ इस तरह से खड़े हैं, जिसे देखकर ऐसा लग रहा है कि दोनों पति-पत्नी हैं.

तस्वीर में इन दोनों सितारों के अलावा एक और शख्स भी नजर आ रहा है. एक फैन ने लिखा- 'सारा और विक्की फोटो में कपल लग रहे हैं.' इस तस्वीर में सारा हरे रंग की प्रिंटेड साड़ी पहने नजर आईं तो वहीं विक्की नीले रंग की टी-शर्ट के साथ लाल जैकेट पहने दिखे. दोनों की ये वायरल तस्वीर उनकी आने वाली फिल्म की लग रही है. दोनों जल्द फिल्म 'लुका छिपी पार्ट 2' में नजर आएंगे. हो सकता है कि ये तस्वीर इसी फिल्म के सेट की हो.

नया साल हौसला बेमिसाल 2022

2022 में बॉलीवुड-दक्षिण की जुगलबंदी

नव वर्ष 2022 का आगाज हो चुका है. इस साल बॉलीवुड और दक्षिण भारतीय सिनेमा की दिलचस्प जुगलबंदी नजर आने वाली है. साउथ सिनेमा के कई कलाकार हिंदीभाषी दर्शकों के बीच अपनी फिल्मों के जरिए पहुंचेंगे, वहीं साउथ की कुछ बेहतरीन फिल्मों के हिंदी रीमेक भी मनोरंजन की खुराक को बढ़ाएंगे. ऐसी ही एक फिल्म ऐलान के बाद से ही चर्चा में है.

यह फिल्म है विक्रम वेधा का हिंदी रीमेक, जिसमें सैफ अली खान और रितिक रोशन के साथ राधिका आप्टे मुख्य स्टार कास्ट का हिस्सा हैं. फिल्म का निर्देशन वही पुष्कर-गायत्री कर रहे हैं, जिन्होंने 2017 में आई विक्रम वेधा का निर्देशन किया था. विक्रम वेधा एक एक्शन थ्रिलर है. इसमें सैफ ने कई जबरदस्त एक्शन सीक्वेंस शूट किए हैं. विक्रम वेधा की कहानी विक्रम और बेताल की माइथोलॉजी से प्रेरित है, जो एक पुलिस ऑफिसर और गैंगस्टर के बीच चलती है. वहीं 2022 में एसएस राजामौली की 'RRR' ब्रिटिश हुकूमत के दौर में सेट पीरियड ड्रामा फिल्म है. फिल्म में रामचरन तेजा और एनटीआर जूनियर लीड रोल्स में हैं, जबकि अजय देवगन और आलिया भट्ट अहम किरदारों में नजर आएंगे. इसके अलावा रोमांटिक थ्रिलर फिल्म 'राधेश्याम' में प्रभास के साथ पूजा हेगड़े लीड रोल में हैं. यह फिल्म तेलुगु के साथ हिंदी, तमिल, मलयालम और कन्नड़ भाषाओं में रिलीज की जाएगी.

CAREER जोन

इंडस्ट्री की लगातार बदलती डिमांड और एडवांस होती टेक्नोलॉजी ने कई ऐसी नौकरियां मार्केट में पैदा की हैं जो आपको रईस लोगों की कैटेगरी में शुमार कर देंगी. कुछ ऐसी नौकरियां हैं, जिनकी इस नये साल 2022 में अच्छी डिमांड रहेगी. इन फील्ड्स में बेशुमार अवसर, अच्छे पैकेज से भरे रहने की पूरी संभावना है.

नये साल में मोटी सैलरी वाली जॉब्स का बोलबाला

नया साल हौसला बेमिसाल 2022

सिस्टम एनालिस्ट

इसे आप बिजनेस टेक्नोलॉजी एनालिस्ट भी कह सकते हैं. इन आईटी प्रोफेशनल्स की विशेषज्ञता एनालाइजिंग, डिजाइनिंग और इंफोर्मेशन सिस्टम को लागू करने में होती है. ये कंपनी में सिक्योरिटी ऑडिट भी करते हैं. आमतौर पर इनकी सैलरी 14 से 16 लाख सालाना तक हो सकती है.

ब्लॉकचेन इंजीनियर

ब्लॉकचेन इंजीनियर ब्लॉकचेन टेक्नोलॉजी की मदद से आर्किटेक्चर व सॉल्यूशन विकसित कर उसे लागू करने में निपुणता हासिल करते हैं. ये लोग असल में डाटा सर्विस कंपनी या टेक्नोलॉजी कंसल्टिंग कंपनी के लिए एक डिजिटल ब्लॉकचेन तैयार करते हैं. इनकी औसत सैलरी 15 लाख सालाना होती है.

प्रोडक्ट मैनेजर

किसी उत्पाद को बेहतर बनाने के लिए कस्टमर की जरूरत को समझना होता है. यह प्रोडक्ट मैनेजर का काम होता है. प्रोडक्ट मैनेजर बिजनेस स्ट्रेटजी बनाते हैं. ये लोग सॉफ्टवेयर इंजीनियर, डाटा साइंटिस्ट और प्रोडक्ट साइंटिस्ट्स के साथ कॉर्डिनेट भी करते हैं. इनकी औसत सैलरी करीब 20-25 लाख सालाना होती है.

फुल स्टैक डेवलपर

ये प्रोफेशनल्स क्लाइंट और सर्वर सॉफ्टवेयर दोनों बना सकते हैं. ये लोग फ्रंट एंड व बैकेंड दोनों पर काम करते हैं. इन्हें ब्राउजर, सर्वर, डाटाबेस प्रोग्राम करना आना चाहिए. जावास्क्रिप्ट, जेक्वेरी, एंगुलर का अच्छा ज्ञान जरूरी है. इनकी औसत सैलरी करीब 12 लाख सालाना होती है.

डाटा साइंटिस्ट

डाटा साइंटिस्ट एक तरह के एनालिटिकल एक्सपर्ट्स होते हैं जो अपनी स्किल्स का इस्तेमाल ट्रेड तलाशने और डाटा मैनेज दोनों में करते हैं. ये प्रोफेशनल्स कंप्यूटर साइंस, स्टैट्स, मैथ्स को एक जगह लाकर डाटा को एनालाइज करते हैं और रिजल्ट निकालते हैं. इनकी औसत सैलरी करीब 15 लाख सालाना होती है.

बालों की हेरफेर

एक्ट्रेस अनुष्का शर्मा ने अपनी दो सेल्फी को इंस्टाग्राम पर साझा किया है जिस पर उनके फैंस जमकर कमेंट कर रहे हैं.

तस्वीरों में अनुष्का ब्लैक बटन-डाउन टॉप पहने नजर आ रही हैं. वह अपने बालों के साथ खेलते हुए सेल्फी के लिए पोज देती हुई दिखाई दे रही हैं. इन तस्वीरों में वह खूबसूरत लग रही हैं और फैंस को अपने सिर के बालों को भी दिखा रही हैं. अनुष्का की इस तस्वीर पर एक फैन ने लिखा है- बाल की हेरफेर. वहीं अन्य यूजर्स तस्वीरों के नीचे कमेंट करके उनकी खूबसूरती की तारीफ कर रहे हैं.

हिंदी चंकी डॉयलॉग्स से लगता है डर

अभिनेत्री कोंकणा सेन शर्मा ने कहा कि मुझे बहुत सी चीजों से डर लगता है, 'हिंदी के बड़े चंकी डॉयलॉग्स' उनमें से एक हैं. यह मेरा अबतक का सबसे बड़ा डर है, मैं इनकी तैयारी काफी दिनों और हफ्तों पहले से ही शुरू कर देती हूं. मुझे बहुत खुशी होती है कि अब मेरा बेटा इनमें मेरी मदद करता है. उन्होंने कहा, कभी-कभी अगर मुझे स्क्रिप्ट के स्तर पर बहुत लंबे मोनोलॉग मिलते हैं तो मैं परेशान होकर कहती हूं कि 'मैं नहीं कर सकती'. वह कहती हैं, मुझे यह पसंद नहीं है कि एक कैरेक्टर ही सब कुछ समझा रहा हो.

मैं नहीं चाहती कि पूरी फिल्म को मैं अपने ही माध्यम से समझाऊं. मैं (कोंकणा सेन) कहती हूं कि इसे केवल मेरे माध्यम से मत करो. स्क्रिप्ट को बेहतर करो, स्क्रिप्ट बेहतर होनी चाहिए. अभिनेता रणवीर शौरी और कोंकणा का बेटा है हारून. दोनों की शादी 2010 में हुई थी, लेकिन दोनों 2015 से अलग रहने लगे थे. पिछले साल दोनों ने आपसी सहमति से तलाक ले लिया. दोनों के पास बेटे की संयुक्त कस्टडी है. वह अभिनेता अर्जुन कपूर के साथ फिल्म 'कुट्टी' में दिखाई देंगी.

सरदर्दी किसिंग सीन 37 रीटेक देने पड़े

कार्तिक आर्यन को एक बार किसिंग सीन के लिए 37 रीटेक देने पड़े थे. वह यह सीन करते-करते परेशान हो गए थे. वह फिल्म 'कांचीः अनब्रेकेबल' में काम कर रहे थे, जिसके डायरेक्टर थे सुभाष घई. फिल्म में उनको लीड एक्ट्रेस मिष्टी के साथ एक किसिंग सीन करना था, जो उनके लिए उस समय आसान नहीं था क्योंकि उन्हें किस करना आता ही नहीं था.

कार्तिक ने बताया कि फिल्म के एक सीन में सुभाष पैशनेट वाला किस चाहते थे और मुझे किस करना आता नहीं था. मैं उनसे पूछने वाला था कि आप ही करके दिखा दो कि कैसे करना है? मैंने कभी सोचा नहीं था कि किसिंग सीन इतनी बड़ी सरदर्दी होगी. उस दिन हम लवर्स की तरह बर्ताव कर रहे थे. आखिरकार, हमने वैसा ही शॉट दिया जैसा सुभाष चाहते थे और वह खुश हो गए. कार्तिक ने बताया कि उन्हें मिष्टी के साथ ये एक सीन करने में 37 रीटेक देने पड़ गए थे.

Gadgets जोन

स्पार्क 8 Pro

टेक्नो ने स्मार्टफोन टेक्नो स्पार्क 8 **Pro** को लांच किया है. इस फोन में एंड्रॉयड11 आधारित **HiOS** v7.6 दिया गया है. इसमें 6.8 इंच की फुल एचडी प्लस डिस्प्ले दी गई है. डिस्प्ले की स्टाइल डॉट नॉच है. फोन में मीडियाटेक हीलियो **G**85 प्रोसेसर, 4 जीबी **LPDDR4x** रैम और 64 जीबी की स्टोरेज दी गई है. रैम को 3 जीबी तक बढ़ाया जाएगा. फोन में तीन रियर कैमरे दिए गए हैं जिनमें प्राइमरी लेंस 48 मेगापिक्सल का है. रियर कैमरे के साथ सुपर नाइट मोड, इंटेलिजेंट फोकस और मल्टी फ्रेम एक्सपोजर जैसे फीचर्स दिए गए हैं.

दूसरा लेंस 2 मेगापिक्सल का और तीसरा लेंस AI है. फ्रंट में 8 मेगापिक्सल का कैमरा है. इस फोन में 4G, ब्लूटूथ v5, FM रेडियो, GPS/A-GPS, माइक्रो यूएसबी पोर्ट, OTG, Wi-Fi और यूएसबी टाइप-सी पोर्ट है. फोन में साइड माउंटेड फिंगरप्रिंट सेंसर दिया गया है. इसमें 5000mAh की बैटरी है, जिसके साथ 33W की फास्ट चार्जिंग का सपोर्ट है.

100 फीसदी वाली सुष्मिता

अभिनेत्री सुष्मिता सेन ने कहा है कि जब वह प्यार करती हैं, तो अपना 100 फीसदी देती हैं और ब्रेकअप में भी वह ऐसा ही करती हैं. उन्होंने रोहमन शॉल के साथ अपने रिश्ते और ब्रेकअप पर बात करते हुए कहा कि दोनों लोगों के लिए करीब होना बहुत जरूरी है, ताकि वे अपनी जिंदगी में आगे बढ़ सकें. और हां, दोस्ती हमेशा बनी रहती है. अपनी उम्र में, अगर मैं बैठकर भयानक चीज के बारे में सोचना शुरू कर दूं तो यह सच में मुझे लगेगा कि मैंने अपनी जिंदगी को बर्बाद कर दिया. मैंने हर रिश्ते से बहुत कुछ सीखा है. ऐसे में अपना सच बोलना सबसे खूबसूरत बात होती है.

सुष्मिता ने कहा, 'मैं 100 फीसदी वाली इंसान हूं. जब मैं प्यार में होती हूं तो मैं 100 फीसदी होती हूं. इसलिए जब हम छोड़ते हैं, तो भी हमें 100 फीसदी देना चाहिए. कारण जो भी हो, आपकी जिंदगी एक लूप में रहने लिए नहीं है. सच्चाई अविश्वसनीय होती है, क्योंकि यह लोगों को दोस्त बने रहने और एक-दूसरे के लिए अच्छा बनने की अनुमति देती है. दुनिया को उस प्यार की जरूरत है. इसमें पहले से ही काफी परेशानियां हैं.'

TV मैजिक

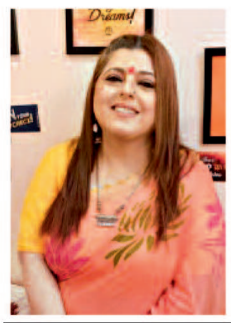

बच्चों की चाची गोली बुआ

शो 'कभी कभी इत्तेफाक से' में किरण उर्फ 'गोली बुआ' की भूमिका निभाने वाली डेलनाज ईरानी ने कहा कि यह एक बहुत फील-गुड और 'स्लाइस ऑफ ए लाइफ' वाला शो है. गोली बुआ परिवार में बच्चों की चाची हैं. यह एक वास्तविक शो और मेरा एक वास्तविक किरदार है, इसलिए मैं इसमें सरल साड़ी के लुक में नजर आऊंगी. इसमें सीधे लंबे बाल, कम गहने, आंखों में काजल और एक बड़ी गोल बिंदी मेरे लुक को पूरा करेगी. मुझे लगता है कि सकारात्मक और प्रेरित होने के लिए आपको जीवन में सकारात्मक दिमाग से रहना होगा. इस नये वर्ष 2022 के लिए मेरा एकमात्र एजेंडा है 'कभी कभी इत्तेफाक से' को एक बड़ा ब्लॉकबस्टर शो बनाना और इसे आगे तक ले जाना.

हर दीवार तोड़ने को तैयार

शो 'धड़कन जिंदगी की' में डॉ. दीपिका की भूमिका निभाने वाली अभिनेत्री अदिति गुप्ता ने कहा कि डॉ. दीपिका आज की उस महिला का प्रतिनिधित्व करती है, जो अपने हक का सम्मान पाने के लिए हर दीवार तोड़ने को तैयार है. अदिति ने कहा कि वर्तमान ट्रैक में जहां डॉ. दीपिका अपने सपनों को पूरा करने और अस्पताल में लोगों की मदद करने पर ध्यान केंद्रित कर रही हैं, वहीं वो डॉ. अभय की भावनाओं से बेखबर हैं. वह अपनी जिंदगी में डॉ. विक्रांत की मौजूदगी को स्वीकार करती हैं और दोस्ती का हाथ बढ़ाती हैं. उन्होंने कहा कि योग मुझे शांत रहने और मेरे विचारों को व्यवस्थित रखने में मदद करता है. यह उन चीजों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए एक अच्छा अभ्यास है, जो आपको दिन भर में करने की आवश्यकता होती है.

hillviewsamachar@gmail.com

हिलव्यू समाचार

03

जयपुर ≫ शुक्रवार, 07 जनवरी, 2022

अल्पसंख्यक ऋण माफी योजना के लाभार्थियों को अदेय प्रमाण पत्र एवं ऋण वितरण कार्यक्रम

योजनाओं का लाभ उठाकर तालीम और स्वरोजगार से जुड़े अल्पसंख्यक : अशोक गहलोत

जयपुर (हिलव्यू समाचार)। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा कि राज्य सरकार अल्पसंख्यक समुदाय के उत्थान के लिए प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है। इस वर्ग के लोग बेहतर तालीम एवं कौशल विकास के माध्यम से रोजगार से जुड़कर आगे बढ़ सकें, इस उददेश्य से विभिन्न योजनाएं संचालित की जा रही हैं।

गहलोत गुरूवार को मुख्यमंत्री निवास पर अल्पसंख्यक ऋण माफी योजना के लाभार्थियों को अदेय प्रमाण पत्र एवं ऋण वितरण कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कार्यक्रम में लाभार्थियों को शिक्षा एवं व्यावसायिक ऋणों की माफी के अदेय प्रमाण पत्र प्रदान किए तथा ऋण के चैक भी सौंपे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि किसी भी समुदाय के विकास के लिए तालीम बेहद जरूरी है। तालीम के बिना जीवन में अंधियारा है। इसी सोच को ध्यान रखकर राज्य सरकार ने शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व फैसले लिए हैं। विगत तीन वर्षों में 123 नये कॉलेज खोले गए हैं। जिनमें 33 महिला महाविद्यालय हैं। साथ ही ऐसे विद्यालय जिनकी उच्च माध्यमिक कक्षाओं में 500 छात्राएं होंगी, वहां कॉलेज खोलने की घोषणा भी की है। उन्होंने कहा कि अल्पसंख्यक समुदाय भी तालीम हासिल करने में पीछे नहीं रहे।

गहलोत ने कहा कि राज्य सरकार मदरसों के आधुनिकीकरण और उनमें उचित सुविधाएं विकसित कर रही है। ताकि यहां पढ़ रहे बच्चों को हर विषय की अच्छी तालीम मिले। मदरसा बोर्ड का एक्ट भी बनाया गया है। उन्होंने कहा कि हर वर्ग को इलाज के खर्च की

चिंता से मुक्त करने की दिशा में मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना लागू की गई है। सभी परिवार इस योजना में अपना रजिस्ट्रेशन कराएं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि अल्पसंख्यक वर्ग के युवाओं में शिक्षा के प्रसार के लिए आवासीय विद्यालय, छात्रावास, छात्रवृत्ति, स्कूटी वितरण, मदरसों में कम्प्यूटर जैसी सुविधाएं सरकार प्रदान कर रही है। इस वर्ग के आर्थिक रूप से कमजोर आय वर्ग के युवाओं को रोजगार से जोड़ने तथा शिक्षा के लिए रियायती ब्याज पर ऋण भी उपलब्ध कराया जा रहा है। इन सभी योजनाओं का वे लाभ उठाएं। इस अवसर पर गहलोत ने अल्पसंख्यक मामलात एवं वक्फ मंत्री शाले मोहम्मद के विधानसभा क्षेत्र पोकरण में विगत तीन वर्षों में हुए विकास कार्यों एवं उपलब्धियों पर आधारित पुस्तिका का विमाचन भी किया।

कार्यक्रम में अल्पसंख्यक मामलात एवं वक्फ मंत्री शाले मोहम्मद ने कहा कि राज्य सरकार की पहल पर राजस्थान अल्पसंख्यक वित्त एवं विकास सहकारी निगम द्वारा वर्ष 2013-2014 तक के मंजूर सभी बकाया ऋणों की माफी के लिए अल्पसंख्यक आम ऋण माफी (एमनेस्टी) योजना-2021 लागू की गई है। इस योजना के पहले चरण में 5149 लोगों को 40.33 करोड़ रूपए का लाभ दिया गया है। उन्होंने बताया कि आरएएस-2021 भर्ती में जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी के 17 तथा कार्यक्रम अधिकारी के 33 पदों पर अभ्यर्थियों का चयन किया गया है। इससे विभाग की कल्याणकारी योजनाओं का और बेहतर क्रियान्वयन हो सकेगा।

शिक्षा राज्यमंत्री श्रीमती जाहिदा खान ने कहा कि मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने अल्पसंख्यक वर्ग के कल्याण का हमेशा ध्यान रखा है। मुख्यमंत्री निशुल्क दवा योजना, चिरंजीवी योजना, महात्मा गांधी अंग्रेजी माध्यमिक स्कूल जैसी योजनाओं से अन्य वर्गों के साथ-साथ अल्पसंख्यक समुदाय को भी भरपूर लाभ मिल रहा है।

मुख्य सचिव निरंजन आर्य ने कहा कि अल्पसंख्यक समुदाय में शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए राज्य सरकार ने 8 आवासीय विद्यालय मंजूर किए हैं। साथ ही उन्हें बेहतर शैक्षिक वातावरण उपलब्ध कराने के लिए 21 छात्रावास भवन निर्माण की मंजूरी दी गई है।

अल्पसंख्यक मामलात एवं वक्फ विभाग के शासन सचिव पीसी किशन ने बताया कि अल्पसंख्यकों के चहुंमुखी विकास के लिए 100 करोड़ रूपए के विकास कोष का गठन किया जा रहा है। इससे अल्पसंख्यक कल्याण की योजनाओं का बेहतर क्रियान्वयन हो सकेगा।

कोविड को देखते हुए कपड़ा और जूते पर जीएसटी की दर नहीं बढ़ाई जायेः गर्ग

हिलव्यू समाचार

जयपुर। नई दिल्ली के विज्ञान भवन में शुक्रवार को आयोजित जीएसटी काउंसिल की बैठक में राजस्थान की तरफ से तकनीकी शिक्षा राज्य मंत्री सुभाष गर्ग ने राज्य का पक्ष रखते हुए जीएसटी काउंसिल चेयरपर्सन एवं वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण से आग्रह किया कि कोरोना महामारी में ओमिक्रोन के बढ़ते हुए केसों को देखते हुए एवं अर्थव्यवस्था की गिरती हुई हालात से राज्यों के राजस्व पर काफी विपरीत प्रभाव पड़ा है इसलिए कोविड के प्रभाव से बाहर आने तक जीएसटी की दरों में किसी प्रकार की बढ़ोतरी नहीं की जाये। उन्होंने बताया कि जीएसटी काउंसिल के पूर्व निर्णयानुसार 1 जनवरी 2022 से कपड़ा एवं रेडिमेड गारमेंट्स जैसे 1000 रुपये से कम लागत वाले आइटम एवं रुपये 1000 से कम लागत वाले फुटवियर पर जीएसटी दर 5 से बढ़ाकर 12 प्रतिशत प्रस्तावित थी जिसे आगामी 2 वर्ष तक स्थगित रखा जाना चाहिए। उन्होंने बताया कि टेक्सटाइल व्यापारियों की मांग अनुसार जीएसटी दर 2 वर्ष तक नहीं बढ़ाने का प्रस्ताव राजस्थान सरकार की तरफ से प्रभावी तरीके से जीएसटी काउंसिल के समक्ष रखा।

तकनीकी शिक्षा राज्य मंत्री सुभाष गर्ग ने कहा कि मुख्यमंत्री अशोक गहलोत समय-समय पर जीएसटी की दरें नहीं बढ़ाने के लिए केंद्र सरकार से आग्रह करते रहे हैं। काउंसिल की बैठक में डॉ. गर्ग ने कहा कि राजस्थान को मिलने वाले जीएसटी क्षतिपूर्ति सेस 7433 करोड रुपए का तत्काल भुगतान किया जाये ,साथ ही उन्होंने मांग रखी कि जीएसटी क्षतिपूर्ति सेस भुगतान अवधि जुलाई 2022 से 5 साल बढ़ाकर जुलाई 2027 तक की जाये। राज्य सरकार की सभी मांगों पर केंद्रीय वित्त मंत्री एवं जीएसटी काउंसिल की चेयरपर्सन निर्मला सीतारमण ने सकारात्मक निर्णय लेने का आश्वासन दिया।

मुख्यमंत्री गहलोत ने जरूरतमंद लोगों को बांटे कम्बल

हिलव्यू समाचार

जयपुर। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने नए वर्ष के अवसर पर शनिवार को रामनिवास बाग के पीछे बने नगर निगम के अस्थायी रैन बसेरे में जरूरतमंद लोगों को कम्बल वितरित किए।

गहलोत ने रैन बसेरे में मौजूद लोगों से बड़ी आत्मीयता से बात की और उनके हालचाल पूछे। उन्होंने उपचार के लिए जयपुर आए और रैन बसेरे में रह रहे उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र सहित अन्य राज्यों के रोगियों एवं उनके परिजनों से बातचीत की। रोगियों एवं उनके परिजनों ने बताया कि राजस्थान में चिकित्सा सुविधाएं बेहतर हैं। वे यहां मिले उपचार से संतुष्ट हैं। साथ ही प्रदेश के कुछ रोगियों ने मुख्यमंत्री को चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना से मिल रहे लाभ के बारे में अवगत कराया। उन्होंने कहा कि इस योजना से उनका निशुल्क उपचार संभव हो सका। मुख्यमंत्री ने रैन बसेरे में रह रहे महाराष्ट्र के एक व्यक्ति श्री रामावतार को समुचित उपचार उपलब्ध कराने के लिए जिला कलेक्टर अंतर सिंह नेहरा को निर्देश दिए। जलदाय मंत्री महेश जोशी, विधायक रफीक खान, महापौर जयपुर हैरिटेज मुनेश गुर्जर, महापौर जयपुर ग्रेटर शील धाबाई, जयपुर पुलिस आयुक्त आनंद श्रीवास्तव, नगर निगम आयुक्त यज्ञमित्र सिंह, अवधेश मीणा एवं अन्य अधिकारी भी उपस्थित थे।

ट्रैफिक पुलिसकर्मियों से की बातचीत

मुख्यमंत्री ने लौटते समय बिड़ला मन्दिर के बाहर ड्यूटी पर तैनात ट्रैफिक पुलिसकर्मियों से बातचीत की और उनकी समस्याओं को जाना। उन्होंने पुलिसकर्मियों से उनके ड्यूटी आवर्स एवं अन्य दायित्वों के बारे में जानकारी ली और अधिकारियों को उनकी समस्याओं के निराकरण के लिए निर्देश दिए।

प्रदेश के लिए नए साल की खुशखबरी

गुढ़ा वेस्ट में लिग्लाइट खनन और पावर प्लांट लगाने का बनेगा रोडमेप

हिलव्यू समाचार

जयपुर। प्रदेश के लिए नए साल के लिए विद्युत क्षेत्र के लिए खुशखबरी हो सकती है कि राज्य सरकार लिग्नाइट आधारित गुढ़ा वेस्ट में थर्मल पॉवर प्लांट लगाने के संभावित संभावनाओं के प्रति गंभीर हो गई है। अतिरिक्त मुख्य सचिव ऊर्जा डॉ. सुबोध अग्रवाल ने शुक्रवार को विद्युत भवन में एनर्जी और माइंस से जुड़े उच्चाधिकारियों की बैठक में संभावित विकल्पों पर विचार विमर्श किया।

एसीएस माइंस, पेट्रोलियम और एनर्जी डॉ. सुबोध अग्रवाल ने बताया कि राज्य में गुढ़ा वेस्ट में 10 लाख प्रतिटन लिग्नाइट उत्पादन क्षमता की माइनिंग राजस्थान राज्य माइंस व मिनरल के पास उपलब्ध है। उन्होंने बताया कि 2005 से आवंटित गुढ़ा वेस्ट माइंस में लिग्नाइट का खनन और उस लिग्नाइट का वहां पर ही 125 से 135 मेगावाट बिजली उत्पादन क्षमता का प्लांट लगाने की योजना थी जो किन्हीं कारणों से धरातल पर नहीं आ सका है। उन्होंने बताया कि इस माइंस में लिग्नाइट का खनन और उससे पावर प्लांट लगाकर बिजली उत्पादन के संभावित चार विकल्पों पर आज विचार किया गया।

एसीएस डॉ. अग्रवाल ने राजस्थान विद्युत उत्पादन निगम, राजस्थान ऊर्जा विकास निगम और राजस्थान माइंस एवं मिनरल्स को इसके लिए रोडमेप बनाने के निर्देश दिए। उन्होंने बताया कि इसी क्षेत्र में पहले से ही गुढ़ा ईस्ट में भारत सरकार की नेवेली लिग्नाइट द्वारा खनन और पावर प्लांट में विद्युत उत्पादन हो रहा है। इसी

तरह से बरसिंगसर में निजी क्षेत्र में विद्युत उत्पादन किया जा रहा है। चेयरमैन डिस्कॉम्स भास्कर ए सावंत ने बताया कि गुढ़ा वेस्ट में राज्य सरकार की लिग्नाइट माइन में खनन और विद्युत उत्पादन का संयुक्त कार्य होने से प्रदेश में विद्युत उत्पादन क्षमता में बढ़ोतरी हो सकेगी। उन्होंने बताया कि इससे विद्युत लागत भी कम आएगी और यहां के लिग्नाइट का उपयोग प्रदेश में ही हो सकेगा।

राजस्थान विद्युत उत्पादन निगम के सीएमडी आर के शर्मा ने बताया कि उत्पादन निगम द्वारा संभावित सभी विकल्पों का अध्ययन कर जल्दी ही राज्य सरकार को रोडमेप प्रस्तुत कर दिया जाएगा। उन्होंने बताया कि राज्य में विद्युत उत्पादन क्षमता बढ़ाने में यह उपयोगी निर्णय सिद्ध होगा।

बैठक में आरएसएमएमएल के वित्तीय सलाहकार डॉ. टीआर अग्रवाल, महाप्रबंधक लिग्नाइट अरुण सिंह और वरिष्ठ प्रबंधक असीम अग्रवाल ने पीपीटी के माध्यम से विस्तार से जानकारी दी। निदेशक ऊर्जा विकास निगम पीएस सक्सैना से बताया कि इस परियोजना को धरातल में लाने के संयुक्त प्रयास किए जाने चाहिए। बैठक में संयुक्त सचिव एनर्जी आलोक रंजन, डीएस माइंस नीतू बारुपाल, एमडी जयपुर डिस्काम नवीन अरोडा, उत्पादन निगम देवेन्द्र श्रृंगी, ऊर्जा विकास निगम के मुकेश बंसल व अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

पंछी फाउंडेशन संस्था के विशाल रक्तदान शिविर में 502 यूनिट एकत्रित

हिलव्यू समाचार

जयपुर। सैनिक के शोर्य से प्रेरित पंछी फाउंडेशन संस्थान का दशम विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन आनन्द बाड़ी, सूरज पोल, गलता गेट में रविवार 2 जनवरी 2022 को किया गया। रक्तदान शिविर में महिलाओं, युवाओं ने बड़ चडकर हिस्सा लिया। इस बार शिविर में 502 रक्त वीरों ने रक्तदान किया।शिविर में सवाई मानसिंह अस्पताल, ट्रॉमा सेंटर, महिला चिकित्सालय, गुरुकुल अस्पताल, पुष्पा देवी अस्पताल, जनाना ने रक्त संग्रहित किया। संस्था के अध्यक्ष राहुल मंगल ने सभी रक्तदान करने वाले रक्त वीरों का सम्मान किया। सहयोगी संस्थाओ सदाशिव प्रदोष मंडल, राधा गोविंद परिवार ने अपना पूर्ण योगदान किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप मे भाजपा जयपुर जिला अध्यक्ष एवं पूर्व विधायक मोहनलाल गुप्ता, पूर्व विधायक राजकुमार शर्मा ने अपनी शिरकत दी। शिविर में इस बार 38 युवाओं ने प्रथम बार रक्तदान किया। पंछी फाउंडेशन संस्थान द्वारा रक्तदान करने वाले सभी रक्त वीरों का प्रशस्ति पत्र देकर आभार व्यक्त किया ।

सामूहिक लीडरशिप में लड़ेगी कांग्रेस, बीजेपी सरकार राज्य में हर मोर्चे पर विफलः रघु शर्मा

हिलव्यू समाचार

जयपुर। इस साल होने वाले गुजरात विधानसभा चुनावों में कांग्रेस सीएम का चेहरा घोषित नहीं करेगी। कांग्रेस गुजरात विधानसभा चुनाव सामूहिक नेतृत्व में लड़ेगी। गुजरात कांग्रेस के प्रभारी और पूर्व स्वास्थ्य मंत्री रघु शर्मा ने कहा कि कांग्रेस ने अपवाद को छोड़कर किसी राज्य में मुख्यमंत्री का चेहरा घोषित नहीं किया। जिन पांच राज्यों में चुनाव होने हैं वहां कहीं पर भी सीएम फेस घोषित नहीं किया है, सब जगह सामूहिक लीडरशिप में ही चुनाव लड़ा जाएगा।

रघु शर्मा ने बीजेपी पर निशाना साधते हुए कहा, गुजरात में बीजेपी सरकार हर मोर्चे पर विफल है। गुजरात में कोरोना का कुप्रबंधन सबसे ज्यादा रहा था, कोरोना से गुजरात में सबसे ज्यादा मौतें हुईं। कोरोना मृतकों को मिलने वाली 50 हजार की सहायता तक नहीं दी। कांग्रेस ने वहां न्याय यात्रा शुरू की है। उसमें कोरोना मृतकों के परिवारों का डेटा इकट्ठा किया जा रहा है। वहां कोरोना मृतकों के परिवारों से डोर टू डोर जाकर एक लाख फॉर्म भरवाए हैं, अभी आधे गुजरात का ही दौरा हुआ है।

गुजरात सरकार का कोरोना में भारी कुप्रबंधन रहा। कोरोना मृतकों के आंकड़े केवल 20 हजार बताए गए जबकि तीन लाख लोगों की मौत हुई है। गरीब लोगों को समय पर सहायता तक नहीं दी गई।

रघु शर्मा ने कहा कि बीजेपी को चुनावी साल में जब अपने खराब शासन से हारने का खतरा पैदा हुआ तो वहां सीएम से लेकर पूरी सरकार का चेहरा बदला गया है। इस बदलाव से यह साफ हो गया कि सरकार का काम खराब था इसीलिए सब बदल दिए। जनता सब समझ चुकी है।

आरयू के दीक्षांत समारोह पर लगा कोरोना का ग्रहण

राज्यपाल कलराज मिश्र ने दिए आदेश, 8 जनवरी को ऑनलाइन मोड में होगा आयोजन

हिलव्यू समाचार

जयपुर। राजस्थान विश्व विद्यालय 8 जनवरी को अपना 75वां स्थापना दिवस और दीक्षांत समारोह आयोजित करने जा रहा है। इस समारोह को लेकर यूनिवर्सिटी की ओर से सभी तैयारियां पूरी कर ली गई थी। लेकिन जयपुर में बढ़ते कोरोना प्रकोप के चलते नई गाइड लाइन जारी करते हुए समारोह में शामिल होने वाले लोगों की क्षमता 100 निर्धारित की गई है। जिसके बाद राज्यपाल कलराज मिश्र की ओर से कार्यक्रम को ऑनलाइन मोड पर आयोजित करवाने के निर्देश दिए गए है। ऐसे में अब 8 जनवरी को आयोजित होने वाला 75वां स्थापना दिवस और दीक्षांत समारोह ऑनलाइन आयोजित किया जाएगा।

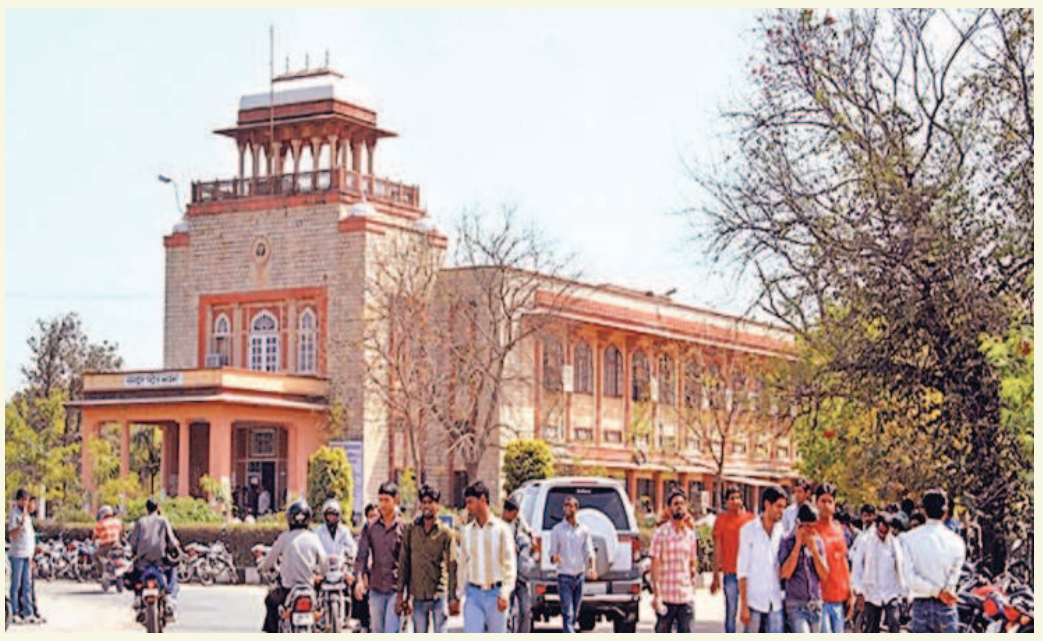

दरअसल, राजधानी में कोरोना दोगुना स्पीड से बढ़ रहा है। सोमवार को 24 घंटे में जयपुर में 414 केस मिले हैं। रविवार को 224 नए मरीज मिले थे। 7 महीने बाद 400 से ज्यादा केस सामने आए हैं। इससे पहले 30 मई को 601 मरीज एक दिन में मिले थे। राजस्थान विश्व विद्यालय के कुलपति प्रो. राजीव जैन ने बताया कि 8 जनवरी को आयोजित होने वाले दीक्षांत समारोह और 75वें स्थापना दिवस की सभी तैयारियां पूरी कर ली गई थी। इसके लिए विश्व विद्यालय द्वारा निमंत्रण पत्र भी प्रिंट करा लिए गए थे। लेकिन सरकार की ओर से नई गाइड लाइन जारी होने के बाद राज्यपाल की ओर से कार्यक्रम को ऑनलाइन मोड पर आयोजित करवाने के निर्देश दिए हैं।

बता दें कि राजस्थान विश्व विद्यालय में आयोजित होने वाले इस दीक्षांत समारोह में इस साल 1 लाख 53 हजार डिग्री, 3 डिलीट की उपाधि, 472 पीएचडी की उपाधि सहित 117 विद्यार्थियों को गोल्ड मैडल का वितरण किया जाना है। जिसमें अब राज्यपाल कलराज मिश्र, उच्च शिक्षा मंत्री राजेन्द्र यादव वर्चुअल रूप से जुड़ेंगे। वहीं सभी विद्यार्थी भी ऑनलाइन ही शामिल होंगे। जबकि यूनिवर्सिटी कुलपति सहित अधिकारी कार्यक्रम से ऑफलाइन मोड से जुड़ेंगे।

hillviewsamachar@gmail.com

हिलव्यू समाचार

04

जयपुर ≫ शुक्रवार, 07 जनवरी, 2022

लघुकथा

ज़मींदार और पेड़

कृष्ण मनु

ज़मींदार के घर के ठीक सामने एक पेड़ था। संगत का असर हुआ। फलफूल से लदते ही पेड़ का अहम जाग उठा। छांह के नीचे दिनभर दिन बच्चों का अंटा-गुच्ची खेलना, राहगीरों का सुस्ताना, झबेदा चलाकर फल तोड़ना, शरीर पर उछलकूद करना अब उसे फूटी आँख न भाता।

आखिर ये क्या समझते हैं मुझे ? क्या मैं इतना गया गुज़रा हूँ कि जो चाहे, मुझसे छेड़छाड़ करे।

उसने प्रकृति देवी से शिकायत की- 'आदमी मुझे बहुत तंग करने लगा है देवी, ज़मींदार जितना बड़ा बना दो ताकि वे डर से मेरे पास फटकने न पायें।'

- 'तथास्तु ।'

पेड़ में बड़े बड़े कांटे उग आए। वह लम्बा..... और लम्बा हो गया । उसके फल विषैले हो गए। छांह नहीं रहने के कारण राहगीर उसकी तरफ देखते भी नहीं। कांटे उगे होने के कारण बच्चे डोल-पत्ते नहीं खेलते। उन्होंने दूसरी जगह तलाश ली। पेड़ की तरफ कोई भूलकर भी नहीं ताकता।

उदास पेड़ ने प्रकृति देवी का पुनः आह्वान किया - 'वरदान लौटा लो देवी, मुझे ज़मींदार नहीं बनना।'

व्यंग्य

चादर देखकर

डा. चन्द्रेश कुमार छतलानी

कोरोना से पीड़ित दो आदमी एक ही निजी अस्पताल में भर्ती हुए। पूछताछ कर एक का नाम दर्ज किया गया 'लाख' और दूसरे का नाम 'करोड़'।

दोनों से पूछा गया, 'क्या मेडिकल बीमा करवा रखा है?' दोनों का उत्तर तो हाँ था लेकिन स्वर-शक्ति में अंतर था। बहरहाल, दोनों से उनकी आर्थिक-शक्ति और बीमा की रकम के अनुसार फीस लेकर अस्पताल में अलग-अलग श्रेणी के कमरों में क्वारेंटाइन कर दिया गया। लाख के साथ एक मरीज़ और था, जबकि दूसरे कमरे में करोड़ अकेला था। लाख को इलाज के लिए दवाईयाँ दी गईं, करोड़ को दवाईयों के साथ विशेष शक्तिवर्धक टॉनिक भी। फिर भी दोनों की तबियत बिगड़ गई।

लाख को जांचने के लिए चिकित्सक दिन में अपने समय पर कुछ मिनटों के लिए आता तो करोड़ के लिए चिकित्सक का समयचक्र एक ही बिन्दू 'शून्य घंटे शून्य मिनट' पर ही ठहरा हुआ था। उसके बावजूद भी दोनों का स्वास्थ्य गिरता गया, दोनों को वेंटीलेटर पर ले जाया गया।

कुछ दिनों के बाद...लाख नहीं रहा... और करोड़ के कुछ लाख नहीं रहे।

काव्य

नववर्ष मंगलम

स्वागत नव वर्ष में आपका नव दिन मंगलमय हो
वर्ष के पूरे 365 दिन ही मंगलमय हो।।
विदा करें विगत वर्ष को जिसमें मिले कुछ कटु मृदु अनुभव
कुछ खट्टी कुछ मीठी यादें बीते साल के कुछ नए अनुभव।।
जीवन माला से बेशक कम हो गए एक और मोती
मन में संतोष हुआ बेशक निकला एक सुखद मोती।।
जीवन के इस दौर में बढ़ा एक साल की नई अनुभव
जीवन जीने की कला में जोड़ा एक साल की नई अनुभव।।
अपनों संग साथ बिताए साल के कुछ अच्छे दिन
कभी सफलता तो कभी निराशा भरा बिता वह साल के दिन।।
जब हासिल किया नई ऊंचाई तब हुआ कुछ अच्छा अनुभव
लेकिन जब निराशा हाथ लगी तो पाया कुछ कटु अनुभव।
इसी कटु और मृदु तथ्यों पर अब विचार करना है
हम मानव की इसी कमी को अब तो खुद भरना है।।
अब आशा आने वाले दिनों से कुछ अच्छा ही होगा
साल के अगले 365 दिन मंगल मंगल ही होगा।।
नववर्ष लेकर आया है नवीन और नूतन प्रभात
खग बिहाग की चीहुँक करा रही इसका नव एहसास।।
नव ऊर्जा संग नई जोश संग करना है इसका आगाज
पिछली गलती को सुधार कर करें कुछ नया आगाज।।
नमन करें उस सत्पुरुषों को जिनका छूटा समाज से साथ
उनके नेक विचारों से अब बनाना एक नया समाज।।

कमलेश झा, भागलपुर

नव वर्ष के नव संकल्प

'आओ करें हम नववर्ष की अगवानी
भूल कर अतीत की सारी कहानी
नव रश्मि,नव दिनकर ,नवतेज हो
बस मानवता से परिपूर्ण हर देश हो'

वर्ष 2022 आ गया है। पदचाप उसकी शनैःशनैः सुनाई देने लगी है। पिछले दो साल 2020 और 2021 पूरी मानव जाति को बहुत सीखें दे कर गये है। इन दो वर्षों में कोरोना के भयानक ताण्डव ने पूरे विश्व को मानों हिला कर रख दिया था और अभी भी ये पूरी तरह चुप नहीं हुआ है, अपनी रक्तबीज जैसी नित नयी शाखाओं से फिर जकड़ने का प्रयत्न करता है।

अर्चना मनोज गर्ग
कोटा राजस्थान

पिछले कुछ दिनों में कोरोना के कारण लोगों ने जो मानसिक एवं शारीरिक दंश झेला है वह अकल्पनीय है। आज हर मानव अपनी दिनचर्या, अपनी जीविका अपने रहन सहन, अपने नाते रिश्ते आदि सभी घटकों में नवीनता एवं सार्थक परिवर्तन चाहता है।

आने वाले नये साल में हम संकल्प करें-

प्रथम तो सभी अपने स्वास्थ्य एवं सेहत के प्रति सचेत रहें। नित्य व्यायाम, नित्य भ्रमण और दौड़ आदि से अपने दिन की शुरुआत करें।

द्वितीय प्रकृति की ओर फिर से लौटें। प्रकृति को हम अपनी सहचरी संगिनी बनाते। कुछ पौधे हम लगायें और दूसरो को भी इसके लिये प्रेरित करें। प्रकृति के दिये हुये हर संसाधन की जितनी आवश्यकता हो उतना ही उपयोग करें और उस संसाधन की वृद्धि कैसे यह उपाय भी हम करें। प्रकृति जब भरी पूरी होगी, तभी तो हमें भरपूर संसार देगी। प्रकृति की आवाजें हम सुन पाये इतनी संवेदनशीलता तो हमें इस आने वर्ष में अपने अन्दर जगानी चाहिये। **तृतीय** अपनी आजीविका हम ईमानदारी और संसाधनों से सम्पन्न करें और इसके साथ ही दूसरों की आजीविका का भी ध्यान रखें ।

चतुर्थ दानशीलता की प्रवृत्ति अपनायें और सामाजिकता के विकास अपना सहयोग करें। इन कुछ छोटे छोटे प्रयासों से आने वालों वर्ष को सुन्दर, सुव्यवस्थित बना सकते हैं।

नववर्ष संदेश...

अपनों का अपनों से लगाव बना रहे...

डा. शिबन कृष्ण रैणा, दुबई

नव-वर्ष यानी नया साल! जो था सो बीत गया और जो काल के गर्भ में है, वह हर पल, हर क्षण प्रस्फुटित होने वाला है। यों देखा जाए तो परिवर्तन प्रकृति का आधारभूत नियम है। तभी तो दार्शनिकों ने इसे चिरंतन सत्य की संज्ञा दी है। इसी नियम के अधीन काल-रूपी पाखी के पंख लग जाते हैं और वह स्वयं तो विलीन हो जाता है किन्तु अपने पीछे छोड़ जाता है काल के सांचे में ढली विविधायामी आकृतियां। कुछ अच्छी तो कुछ बुरी। कुछ रुपहली तो कुछ कुरूप।काल का यह खेल या अनुशासन अनन्त समय से चला आ रहा है।

हम सभी अनेक प्रकार की कमजोरियों से भरे हुए हैं। यह दावा करना बिल्कुल गलत होगा कि हमारे अन्दर कोई अवगुण नहीं है। नये वर्ष में हमें अपने संकल्पों में एक संकल्प यह भी जोड़ लेना चाहिए कि मैं अपने किसी एक अवगुण-विशेष को समाप्त करूँगा। जैसेः मैं अपने क्रोध को नियंत्रित करूँगा। मैं आलस्य से मुक्त होऊँगा। मुझे अपने अन्दर के ईर्ष्या के भाव को समाप्त करना है। वाणी में मिठास पैदा करनी है आदि-आदि। साथ ही 2022 में विनम्रता के महत्व को और भी अच्छी तरह से जानना होगा। विनम्रता एक श्रेष्ठ गुण है। इस गुण से शत्रु को भी मित्र बनाया जा सकता है। गीता में भी विनम्रता के बारे में बताया गया है। जिनके स्वभाव में विनम्रता होती है, वे सभी के प्रिय होते हैं। ऐसे लोगों को हर स्थान पर सम्मान मिलता है।

आइए नयी ऊर्जा, आशा और उत्साह के साथ नववर्ष का स्वागत करें। हर ओर नया और सकारात्मक देखें। सभी चेहरों को नयी नज़र से देखें। हर चीज में नयापन तलाशें। अपने आस-पास को नयी प्रेरणा और नयी आशा-उमंग से देखें। नयी राह की ओर देखें। नये सपने देखें, नए मार्ग बनाएं और उन पर चलना शुरू करें। इच्छा-शक्ति को प्रबल करें। पाखंड का त्याग करें। भरोसा करें, भरोसे के लायक बनें। विश्वास करें, विश्वास जीतें। अपनी गरिमा समझें और दूसरों की अहमियत को समझें। लाख कोशिश के बाद भी मानव मस्तिष्क में स्मृतियां शेष रह ही जाती हैं। फिर भी कोशिश करें कि मात्र अच्छी स्मृतियां ही शेष रहें। इसी के साथ अपनी स्मृतियों से पूर्वाग्रहों को मुक्त करें। यह कठिन तपस्या है, फिर भी प्रयास करें। स्मृतियों को बोझ न बनने दें। स्मृतियों को प्रेरक बनाएं। अच्छी यादें प्रेरणा देती हैं, सुख देती हैं। दुखदायी स्मृतियों को मिटा दें। जिन दुर्गुणों को पिछले वर्ष झेला, उन्हें आज भूल जाएं। हम नये वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं।अतः यह कामना करें कि सब कुछ नया हो। सब कुछ अच्छा हो। हर ओर शुभ हो। हर काम का शुभ आरंभ हो। नए वर्ष में यह भी कामना करें कि युवाओं के लिए रोजगार का मार्ग प्रशस्त हो। व्यापार में चल रही मंदी समाप्त हो। किसानों के लिए सकारात्मक माहौल बने। स्वच्छ भारत बने। कला-संस्कृतियों की रक्षा हो। शहरी-ग्रामीण जीवन स्तर, अमीर-गरीब के बीच खाई चौड़ी न हो और सब के सम्मान और जीवन की रक्षा हो।

इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए हम एक-दूसरे को शुभकामनाएं दें ताकि आने वाला नया वर्ष सबके लिए सुख-समृद्धि के ढेरों अवसर लेकर आए। प्रत्येक वर्ष नए साल के अवसर पर हम सभी को आशा होती है कि नव-वर्ष हमारे लिए काफी अच्छा साबित हो। हम सभी के लिए नया साल नई उम्मीदों, नई इच्छाओं, नई आशाओं तथा नई संभावनाओं को तलाशने का एक सुंदर अवसर होता है।नए साल में हमें यह भी कोशिश करनी चाहिए कि हम पुराने साल में की गई गलतियों को न दोहराएं। बीते वर्ष में की गई गलतियों तथा असफलताओं से सीख लेते हुए हमें ज़िन्दगीं में आगे कदम बढ़ाना चाहिए तथा अपनी सफलता सुनिश्चित करने की कोशिश करनी चाहिए।

बदलते वक्त के साथ बदलें।जमाने के साथ चलें। बदलती तकनीक के साथ बदलें। अपटूडेट रहें ताकि फूहड़ न कहलाएं। नई सुबह इस नए साल में हमारे स्वागत के लिए तैयार खड़ी है। उसका गर्मजोशी के साथ बाहें फैलाकर स्वागत करें और ईश्वर से प्रार्थना करें:

अपनों का अपनों से लगाव बना रहे
आसमां छू लें,पर जमीं पर पाँव डटे रहें,
बीत गया जो वर्ष,उससे कुछ सीख लें
उदासी भूलकर खुशी की बात कर लें।

दुख में किसी को अब न पड़े रोना

कमलेश झा, भागलपुर

कब शुरू हुआ जनवरी कब बीत गया दिसंबर
कुदरत नचा रही थी आदमी को बना कर बन्दर
दो वर्ष पहले जो आया था बनकर कोरोना
अब डर पैदा कर दिया ओमिक्रोन ने सबके अंदर
मुश्किल कर दी थी सब की ज़िन्दगानी
छीन ली थी सबके चेहरों से रवानी
रोजगार सबके बर्बाद हो गए थे
बन गया था सबका यह दुश्मन जानी
पूरा वर्ष सबने इसको झेला डर डर के
बाहर भी निकले तो निकले मर मर के
दूर अपनों से अपनों को कर दिया इसने
चल बसे कई अपनों को याद कर कर के
दहशत में गुजरा यह पूरा साल
स्कूल भी नहीं जा सके हमारे नौनिहाल
इकोनॉमी की भी बिगाड़ दी इसने चाल
मध्यम वर्ग को तो इसने बना दिये फटेहाल
रूप इसने बदला जब ख़त्म होने को आया साल
नाम ओमिक्रोन का सुनकर खराब होने लगा हाल
न मास्क खुलेगा न सामाजिक दूरी होगी कम
कुछ ख़ास नहीं कर पायेगा आने वाला नया साल
कुछ ऐसा चमत्कार कर दे मेरे कान्हा
कि जड़ से जहां से मिट जाए कोरोना
खुशहाली ज़िन्दगी में लाये यह नव वर्ष सबके
दुख में किसी को अब न पड़े रोना

रवींद्र कुमार शर्मा, बिलासपुर हि प्र

नए वर्ष का स्वागत

विदा लेने को खड़ा है साल दो हजार इक्कीस।
दस्तक दे रहा दरवाजे पर साल दो हजार बाइस।।
साल दो हजार इक्कीस तुम्हें विदा देते हम।
पाल रहे नये वर्ष से आशा दिल में दबाये तुम्हारे दिये गम।।
याद कर रहे अपने जीवन के अविस्मरणीय पूर्व साल।
जिसने हमें कर दिया है अत्यंत दुःखी और बेहाल।।
साल दो हजार बीस और दो हजार इक्कीस।
दोनों ने सताया बराबर नहीं रहा कोई उन्नीस।।
दोनों ने हमसे अपनों को छीन कर पल-पल रुलाया।
कोरोना महामारी से दोस्ती कर हमें जी भर सताया।।
प्यारे दो हजार बाइस तुम्हारे बड़े भाइयों ने तो उगला जहर।
हमें सताने में दोनों ने नहीं छोड़ा थोड़ी भी कसर।।
जार-जार रुला डाला हम पर विपदाओं का पहाड़।
तुम्हारे स्वागत में भी कर गए हैं ओमीक्रॉन को तैयार।।
लेकिन प्यारे हम में भी कम नहीं है जीजिविषा।
हम निराशाओं को त्याग दिल में बसाते रहे नई आशा।।
हमने कड़वी यादों को दिल की गहराइयों में बसाया।
पुनः जीवन जीने की सुनहली उम्मीद को गले लगाया।।
कर ली है तैयारी कठिन समय को झेलने की।
चाहत है अब तुम्हारे संग पुनः ऊंचाइयों तक जाने की।।
अब तो कोरोना के टीके संग दवाएं भी आ रहीं।
छोटे बच्चों के टीके लगाने की तैयारियां भी हो रहीं।।
बच्चों को पढ़ाना भी घर से किया हमने आरंभ।
यही तो है हमारा नव जीवन का सकारात्मक प्रारंभ।।
आशा करूं तुम्हारे संग जीवन होगा कुछ आसान।
तुम्हारे सानिध्य में अब मानवता नहीं होगी परेशान।।
मेरे प्यारे बाइस तुम्हें प्रेम से गले हम लगाएंगे।
हमें है पूर्ण विश्वास तुम्हारे सानिध्य में उन्नति कर पाएंगे।।
ओमीक्रॉन से बचाव की हम कर रहे पूरी तैयारी।
रखेंगे मुख पर मास्क निभायेंगे दो गज की सामाजिक दूरी।।
प्यारे भाई हम खेलेंगे तुम्हारे संग अपने जीवन की नई पारी।
इसी आशा विश्वास के साथ बाइस करते हैं आरती तुम्हारी।।

निर्मला कर्ण, राँची झारखण्ड

आलेख

आधुनिक हों पर संस्कारी भी?

रश्मि अग्रवाल
नजीबाबाद (उ0 प्र0)

रिश्तों से जुड़ाव व रीतिरिवाज़, हमारी संस्कृति व सभ्यता से जुड़े हैं। यह हमारी धरोहर हैं। यह अपने ही क्रियाकलापों से बीजारोपण करते रहे हैं पर आज विचारों के तालमेल का अभाव कहिये या अत्यधिक व्यस्त जीवनशैली, जिसमें कटुता स्पष्ट नज़र आ रही है क्योंकि जब बच्चे संयुक्त परिवारों के संरक्षण में न पलकर, नौकर या आया की निगरानी में पलते-बढ़ते हैं, तब उचित संस्कारों के अभाव के कारण वे स्कूल, कॉलेज, सहपाठियों या दूरसंचार से प्राप्त गतिविधियाँ देखकर युवा होते हैं और स्वयं ही अपने जीवन के लक्ष्य निर्धारित कर लेते हैं। यही क्षणमात्र की उत्तेजना, कच्चा-पक्का ज्ञान, क्षणिक सुख की चाह, उनके विचारों पर हावी होकर, अनुचित सेक्स या अन्य गलत कार्यों की ओर अग्रसर करती नज़र आती है। देखा जाये तो आज तलाक या छोड़ने, छुड़ाने के मामले सर्वविदित हैं क्योंकि, ऐसे रिश्तों में, माता-पिता या परिवार के बुजुर्गों का अनुभव नहीं बाँटा जाता। साथ-साथ, आज की जीवनशैली में, उन्मुक्ता, उदण्डता व पैसे को सर्वाधिक महत्व देना, घातक परिणाम की ओर ले जाता है कि जब तक निभती-निभाओ, वरना तोड़ दो इन पवित्र बंधनों को। इसलिए ऐसी स्थिति न आये, अभिभावकों को स्वयं अपने जीवन में मधुरता लानी होगी, व बच्चों को... जानने-समझने के लिए, समय भी देना होगा ताकि हमारे बच्चे... माता-पिता से मिले, सुसंस्कारों की छत्रछाया में, स्वयं के आगामी जीवन की सुखद कल्पना संजोये परिपक्व हों और प्रत्येक रिश्ते को निभाना नहीं, जीना सीखें।

दूसरी ओर ऐसे उदाहरण भी सर्वविदित हैं जिन्हें प्रमाण की आवश्यकता नहीं- स्मरण आ रही वो घटना जो मेरे पड़ौस में घटी थी शिक्षित वृद्ध ने एकमात्र बेटे को उच्च शिक्षा हेतु विदेश भेज दिया... सोच के साथ कि वहाँ अच्छी कमाई कर लेगा तब अपने देश बुला लेंगे। माता-पिता तब युवा थे सब ठीक चल रहा, बेटा कभी-कभी आता... घर में दीवाली सा त्यौहार होता कि विदेश से आ रहा। माँ नज़र उतारती न थकती, पिता उन साथियों को घर बुलाकर, बेटे से मिलवाते व अहंकार की भाषा में कह देते, ''अरे दयाल विदेश की बात ही कुछ और है, देखो मेरे बेटे का पहनना-ओढ़ना, अंग्रेजी में संवाद और पैसे की रेल-पेल, मेरी मानो तुम भी जतिन को भेज दो यहाँ फटफटी चलाता हुआ कब तक जीवन चलाएगा?''

अभी कुछ दिन पूर्व मुझे ज्ञात हुआ कि विदेशी बेटे के वृद्ध माता-पिता कोरोना में, चिकित्सा के अभाव में चल बसे क्योंकि विदेश से आने के साधन बंद बेटा भी क्या करे? दूसरी ओर उनके मित्र दयाल, भरे पूरे परिवार में अपना बुढ़ापा संतुष्टि से काटते रहे और उनका क्रियाक्रम भी दयाल के बेटे ने ही किया।

कभी-कभी ऐसा भी होता कि वृद्ध स्वयं जब युवा माता-पिता की भूमिका में होते हैं, तब स्वयं की ऊर्जा, धन व बल से परिपूर्ण वह आईना नहीं देख पाते, जिसमें उनकी वृद्धावस्था का अक्स हो। इसलिए उनके स्वयं के निर्णय ही उनके बुढ़ापे को या तो वृद्धाश्रम पहुँचा देते हैं, दीन-हीन अवस्था में दम तोड़ देते हैं या जिनके परिवार वाले विदेशों में रोजी कमाने चले गये और वृद्ध अपनी विरासती सम्पत्ति या इन प्रवासी नातों द्वारा बनाई गयी जायदाद की रखवाली करते-करते जीते हुए भी तनहा हो जाते हैं।

तात्पर्य है कि 'जनरेशन गैप' कहकर दोनों ही अपनी जिम्मेदारियों से विमुख न हों और न वृद्धाश्रम की दीवारें खड़ी करनी पड़ें, क्योंकि भारत देश की सभ्यता व संस्कृति, युगों-युगों से अपनी पृथक पहचान बनाए हुए हैं क्योंकि यहाँ परिवार व संबंधों को आदर्श मानते हुए, रिश्तों से जुड़ाव सर्वविदित है। इसलिए हमारे देश में छोटे से छोटा रिश्ता भी समर्पण व त्याग की भावना रखते हुए, जुड़ाव का परिचय देता है। इसलिए हमारे देश की पहचान अन्य देशों से भिन्न है। रिश्ते व उनके खूबसूरत बंधन, जो ईश्वर ने बना कर भेजे हैं, उनमें आत्मीयता तो होनी ही चाहिए ताकि रिश्तों की आवयकताएँ व उनका महत्व समझ आता रहे और बदलती परिभाषा में भी सकारात्मक उत्तर मिलता रहे ताकि आने वाली विषम परिस्थितियों में भी यही रिश्ते-नाते जीवन की सच्ची परिभाषा समझाते हुए एक दूसरे को वास्तविक स्नेह की ऊर्जा देते रहें।

दो दिवसीय साहित्य महोत्सव संपन्न

कोरोना काल के इस विकट दौर में मानसिक एवं शारीरिक संकट से गुजर रहे लोगों के बीच एक नयी एवं सकारात्मक सोच का संचार करने के उद्देश्य के साथ दो दिवसीय राँची लिटरेचर फेस्टिवल का आयोजन किया गया। यह आयोजन PI फाउंडेशन के तत्वावधान में किया गया। जिसके संस्थापक अध्यक्ष डॉ. सुरेश शौर्य 'प्रियदर्शी' एवं उपाध्यक्ष डॉ. रणधीर कुमार, आयोजन व्यवस्थापिका नीतू सिंह जी है।

महोत्सव में देश भर से जुटे कवि-कवयित्रियों ने अपने शब्दों से राँची की फ़िज़ा में एक नयी ऊर्जा, नया रंग घोल दिया। महोत्सव में रामगढ़ की बेटी ममता मनीष सिन्हा ने अपने शब्दों के जादू से सबका मन मोह लिया। उन्होंने अपनी कविता 'मैंने माँ लिखा' प्रस्तुत किया।

'और मैं सोचती हूँ क्या लिखूँ,
सोचा आज वो सर्वस्व लिखूँ,
जिसमें केवल मात्र मैं दिखूं,
परन्तु सोचती हूँ क्या लिखूँ।'

जिसे सुन अतिथियों, श्रोताओं ने मंत्रमुग्ध होकर तालियों की गड़गड़ाहट के बीच उन्हें अपना भरपूर समर्थन और बधाइयां दी।

वहां उपस्थित गणमान्य अतिथियों, साहित्यकारों एवं श्रोताओं को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि झारखण्ड कई भाषाओं और सांस्कृतिक विभिन्नता से परिपूर्ण प्रदेश है। साथ ही उन्होंने झारखण्ड की कला, संस्कृति और साहित्य को पूरी दुनिया के सामने रखने के लिए एक मंच प्रदान करने हेतु राँची लिटरेचर फेस्टिवल के सभी व्यवस्थापकों को धन्यवाद देते हुए कहा कि ऐसे आयोजन सृजनात्मकता को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आ.कुशवाहा शिवपूजन मेहता जी (पूर्व विधायक हुसैनाबाद विधानसभा सह केंद्रीय उपाध्यक्ष आजसू पार्टी) एवं गणमान्य अतिथि पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष डॉक्टर जंगबहादुर पाण्डे जी, वरिष्ठ पत्रकार आ. सुनील सिंह बादल जी, श्री चन्द्रिका ठाकुर देशद्वीप जी तथा वरिष्ठ कवयित्री आ. पूनम रानी तिवारी 'वनांचली' जी आदि काव्य मनीषीगण उपस्थित थे।

hillviewsamachar@gmail.com

हिलव्यू समाचार

05

जयपुर >> शुक्रवार, 07 जनवरी, 2022

एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग में संभावनाएं

भारत की अर्थव्यवस्था में कृषि व्यवस्था का खास योगदान माना जाता है. इसीलिए भारत को कृषि प्रधान देश कहा जाता है. कोरोना संक्रमण के बाद काफी युवा अपनी जड़ों यानी गांवों की ओर वापस लौट गए. वहां जाकर कइयों ने कृषि यानी खेती को अपने रोजगार का जरिया बना लिया. कुछ ने ऑर्गेनिक खेती को बढ़ावा दिया और उसी में अपना करिअर बना लिया. अगर आप भी चाहें तो एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग कोर्स करके इसमें रोजगार की संभावनाएं तलाश सकते हैं. राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक की एक रिपोर्ट के अनुसार, देश में करीब 10 .07 करोड़ परिवार आज भी खेती पर निर्भर हैं. इसमें कोई शक नहीं है कि कोविड काल में इस क्षेत्र में रोजगार की संभावनाएं काफी बढ़ गई हैं. अगर आप भी चाहें तो एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग का कोर्स करके इसमें करिअर बना सकते हैं

एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग भी इंजीनियरिंग की ही एक ब्रांच है. इसमें कृषि उपकरणों और कृषि क्षेत्र में काम आने वाली मशीनरी के निर्माण, डिजाइन और सुधार से संबंधित कार्य किया जाता है. एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग में अधिक कुशलता से काम करने के लिए नए और परिष्कृत कृषि उपकरण डिजाइन किए जाते हैं. एग्रीकल्चर इंजीनियरों की प्रमुख भूमिका बेहतर इंजीनियरिंग विधियों, आविष्कारों, प्रौद्योगिकी और उपकरणों के माध्यम से कृषि उत्पादन में सुधार करना है. जिससे फसल उत्पादन को बेहतर बनाकर किसान और अधिक मुनाफा कमा सकें.

योग्यता

अगर आप एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग के बीटेक कोर्स में एडमिशन प्राप्त करना चाहते हैं तो सबसे पहले आपको 10+2 में साइंस स्ट्रीम के साथ न्यूनतम 50 प्रतिशत अंक प्राप्त होना अनिवार्य है. इसमें 4 साल का ग्रेजुएट कोर्स होता है. इसके बाद पोस्ट ग्रेजुएशन कोर्स यानी एमटेक या एमई किया जा सकता है जो 2 साल का कोर्स होता है. एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग में करिअर बनाने के लिए 10वीं और 12वीं के बाद पॉलिटेक्निक डिप्लोमा भी किया जा सकता है. ये 3 साल का डिप्लोमा कोर्स होता है.

करिअर ऑप्शन

एग्रीकल्चर इंजीनियरों के लिए सरकारी संगठनों में कई जॉब प्रोफाइल मौजूद हैं, जिन पर रहकर वे काम कर सकते हैं. समय-समय पर यहां भर्तियां निकलती रहती हैं. वहीं वर्तमान समय में तो प्राइवेट सेक्टर भी एग्रीकल्चर में रिसर्च और डेवलपमेंट के लिए बड़ी संख्या में एग्रीकल्चर इंजीनियरों को जॉब दे रहे हैं. एग्रीकल्चर फील्ड में B.Tech और M.Tech किए हुए छात्र राज्य सरकार, खाद्य और प्रसंस्करण विभाग, अनुसंधान विभाग और कई अन्य क्षेत्रों में कृषि विकास के लिए निकली रिक्तियों के लिए आवेदन कर सकते हैं. भारत में कृषि इंजीनियरों के लिए शीर्ष जॉब प्रदाताओं में इफको या 'इंडियन फार्मर्स फर्टिलाइजर कोआपरेटिव लिमिटेड' (IFFCO), नेस्ले इंडिया लिमिटेड, अमूल डेयरी, SRIJAN, एस्कॉर्ट्स, श्रीराम फर्टिलाइजर्स एंड केमिकल्स आदि जैसी संस्थाएं शामिल हैं. इसके अलावा कृषि इंजीनियर्स टीचिंग फील्ड में जा सकते हैं. इन जगहों पर आप सर्वे रिसर्च एग्रीकल्चरल इंजीनियर, एग्रीकल्चरल इंजीनियर, एग्रीकल्चर फील्ड ऑफिसर, सब्जेक्ट मैटर स्पेशलिस्ट, खाद्य और पेय पर्यवेक्षक, एग्रोनॉमिस्ट, मृदा वैज्ञानिक जैसे जॉब प्रोफाइल पर कार्य कर सकते हैं.

एंट्रेंस एग्जाम क्रैक करना अनिवार्य

12वीं के बाद अगर आप किसी अच्छे संस्थान से एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग में बीटेक करना चाहते हैं तो आपको इन प्रवेश परीक्षाओं को क्रैक करना होगा.

- इंडियन काउंसिल ऑफ़ एग्रीकल्चरल रिसर्च ऑल इंडिया एंट्रेंस एग्जाम
- IIT-JAM (भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान-संयुक्त प्रवेश परीक्षा)
- ऑल इंडिया इंजीनियरिंग एंट्रेंस एग्जाम
- इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी बीएचयू एंट्रेंस एग्जाम
- इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, ज्वाइंट एंट्रेंस एग्जाम
- नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, कंबाइंड प्री-एंट्रेंस टेस्ट
- केरल इंजीनियरिंग एग्रीकल्चर मेडिकल (KEAM)
- महाराष्ट्र कॉमन एंट्रेंस टेस्ट (MHCET)
- ग्रेजुएट एप्टीट्यूड टेस्ट इन इंजीनियरिंग (गेट)

हमारे प्यारे जीवः कैट्स

प्यारे बच्चों को कविता आंट का ढेर सारा प्यार और चॉकलेट्स,

बच्चों पिछले अंक में मैंने आपको कहा था न् कि हम 'कैट-फ़ैमिली ' के बारे में जानेंगे । कैट सुनकर तो आपको फ़ौरन एक छोटी सी घरों के आस-पास घूमने वाली और ' म्याऊँ ' बोलने वाली बिल्ली का ख़्याल आया होगा, जिसे कुछ लोग पालतू बनाकर भी रखते हैं , है न-! तो सबसे पहले मैं आपका यही भ्रम दूर किये देती हूँ। बच्चों, 'कैट' सिर्फ़ वही नहीं होती बल्कि 'कैट-फ़ैमिली ' में शेर, चीता, लेपर्ड-मने तेंदुआ , जैगुआर जैसे कई बड़े बड़े जानवर भी शामिल हैं । आपने 'एनिमल-किंगडम ' या 'डिस्कवरी चैनल ' देखते हुए इन्हें 'बिग-कैट' नाम देते हुए सुना भी होगा, है न्!

दरअसल कैट चाहे बिग हो या स्मॉल, इन सभी में कुछ कैरेक्टरस्टिक्स कॉमन होती हैं। जैसे कि इनका जनरल बॉडी-प्रोपोर्शन या इनकी फूड हैबिट्स । कैट्स की सारी प्रजातियाँ मांसाहारी होती हैं और अपना शिकार खुद करना पसंद करती हैं। अब चाहे वो शिकार नन्हा सा चूहा हो या ज़ीब्रा हों, या ब्लैक बक, हिरन, मवेशी , बायसन, जिराफ़ जैसे बड़े जानवर । अरे भई हम अपनी छोटी सी बिल्ली मॉसी से जिराफ़ मार कर खाने की उम्मीद तो नहीं कर सकते न् । और क्या एक शेर का पेट महज़ एक चूहे जी से भर जायेगा? बताइये तो ज़रा!

कैट परिवार के सभी सदस्यों के टोज़ में सॉफ़्ट कुशन्स होते हैं जिससे उनके मूव करने पर कोई साउण्ड पैदा नहीं होती और शिकार को अंत तक पता नहीं चलता कि उन पर हमला होने वाला है। तभी तो जब बिल्ली रानी घरों में घुसकर रसोई

से दूध उड़ा चुकती हैं हम तब जागते हैं, है न् बच्चों!

कैट्स द्वारा निकाली गयी ध्वनियों में हाउलिंग, स्क्रीमिंग, म्यूइंग और परिंग इत्यादि शामिल हैं , लेकिन इनमें से एक साउण्ड ऐसी भी हैं जो गले में ख़ास तरह के बोन-फ़ोर्मेशन होने के कारण बिग कैट्स यानी कि शेर , चीते , लेपर्ड्स, जैगुआर वग़ैरह नहीं निकाल सकतीं, और वो है ' पर '। पर का मतलब जानते हो न् बच्चों? ये एक तरह की लो वाइब्रेटरी साउण्ड है जो हमारी बिल्ली रानी खुश होने पर निकालती हैं । घुर घुर घुर! है न् मज़ेदार बात! पर हॉ शेर साहब को दहाड़ने, मतलब रोअर करने की सुविधा भी तो मिली हुई है न-?

क्रमश...

डॉ. कविता माथुर

NIFT : डिजाइनिंग में बनाएं शानदार करिअर

17 जनवरी 2022 तक कर सकते हैं ऑनलाइन आवेदन

6 फरवरी, 2022 को लिखित एंट्रेंस परीक्षा का आयोजन होगा

अगर आप फैशन इंडस्ट्री और डिजाइनिंग में अपनी पहचान बनाना चाहते हैं, तो नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी (निफ्ट) से डिजाइनिंग कोर्सेज कर सकते हैं. संस्थान ने अपने सभी यूजी और पीजी कोर्सेज में प्रवेश के लिए आवेदन आमंत्रित किए हैं. इनमें बैचलर ऑफ डिजाइन (बी.डिज.), बैचलर ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी (बी.एफ.टेक.), मास्टर ऑफ डिजाइन (एम.डिज.), मास्टर ऑफ फैशन मैनेजमेंट (एम.एफ.एम.) और मास्टर ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी (एम.एफ.टेक.), प्रोग्राम्स शामिल हैं. आवेदक 17 जनवरी, 2022 तक ऑनलाइन आवेदन फॉर्म भरकर जमा करवा सकते हैं. यूजी और पीजी प्रोग्राम्स में एडमिशन के लिए देशभर में 32 शहरों में लिखित परीक्षा का आयोजन करवाया जाएगा. संस्थान के बी.डिज. और एम.डिज. प्रोग्राम्स में एडमिशन के लिए आवेदकों को जनरल एबिलिटी टेस्ट (जीएटी) और क्रिएटिव एबिलिटी टेस्ट (सीएटी) दोनों देने होंगे. निफ्ट में एडमिशन के इच्छुक व योग्य आवेदक संस्थान की वेबसाइट www.nift.ac.in पर जाकर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं.

एग्जाम ALERT

दूसरे प्रयास में बन गईं IFS

यूपीएससी परीक्षा के तीनों चरण पास करने वाले अभ्यर्थी को आईएएस, आईपीएस, आईआरएस, आईएफएस ऑफिसर बनने का मौका मिलता है. परीक्षा में पास हो चुके अभ्यर्थियों को उनकी रैंक और प्रिफरेंस के आधार पर पद दिया जाता है. दिल्ली की रहने वाली कनिष्का सिंह ने अपने दूसरे प्रयास में यानी साल 2018 में यूपीएससी परीक्षा पास की थी. संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित होने वाली यूपीएससी परीक्षा को देश की सबसे प्रतिष्ठित और कठिन परीक्षा माना जाता है. इसे पास करने के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती है. ज्यादातर आईएएस ऑफिसर्स ने अपनी सक्सेस स्टोरी में सेल्फ स्टडी और टाइम मैनेजमेंट को परीक्षा का आधार बताया है.

लिया गलती से सबक

दिल्ली की रहने वाली कनिष्का सिंह ने लेडी श्रीराम कॉलेज से साइकोलॉजी में ग्रेजुएशन किया था. उसी दौरान उन्होंने UPSC परीक्षा देने का प्लान बनाकर उसकी तैयारी शुरू कर दी थी. 2017 में दिए पहले अटेम्प्ट में वे सफल नहीं हो पाईं थीं. हालांकि, उन्होंने हार नहीं मानी और 2018 में दूसरा अटेम्प्ट दिया. इसमें उन्होंने अपनी गलतियों पर काम किया और एग्जाम में सफल हो गईं.

सक्सेस STORY

मॉक टेस्ट से आसान हुई राह

कनिष्का साल 2017 में प्रीलिम्स भी क्लीयर नहीं कर पाई थीं. वे बताती हैं कि एग्जाम के लिए उनकी तैयारी अच्छी नहीं थी और ज्यादा मॉक टेस्ट नहीं देना उन्हें भारी पड़ गया था. इस गलती पर उन्होंने ध्यान दिया और सुधार करते हुए UPSC एग्जाम का दूसरा अटेम्प्ट दिया. इसके लिए उन्होंने करीब 60 मॉक टेस्ट दिए थे. उन्होंने कहा कि मॉक टेस्ट में होने वाली गलतियों पर भी अभ्यर्थियों को ध्यान देना चाहिए. इससे सफल होने का चांस बढ़ जाता है.

आंसर राइटिंग की प्रैक्टिस जरूरी

कनिष्का सिंह ने बताया कि यूपीएससी मेन एग्जाम के लिए आंसर राइटिंग बहुत जरूरी है. इसकी प्रैक्टिस करते रहें और एक समय पर एक ही सब्जेक्ट पर फोकस करें. UPSC एग्जाम के लिए अभ्यर्थियों को अपनी क्षमता के अनुसार ही तैयारी करनी चाहिए. लगातार रिवीजन और आंसर राइटिंग की प्रैक्टिस करने के साथ ही टाइम मैनेजमेंट का ध्यान रखना भी जरूरी है.

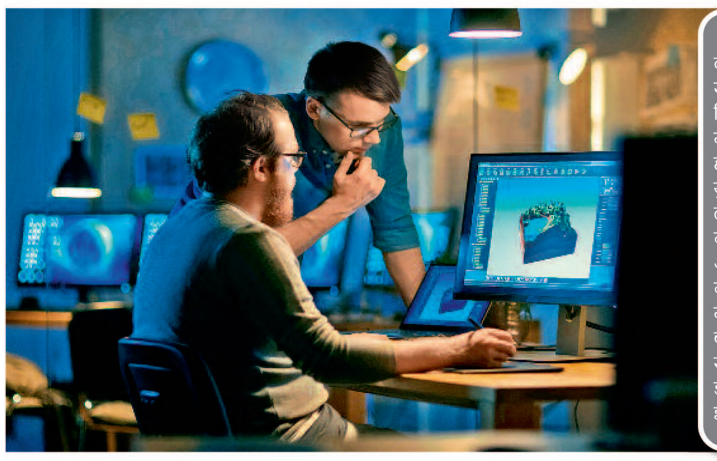

कंप्यूटर गेम के बाद मोबाइल गेम को लेकर लोगों के बीच क्रेज टाइम के साथ बढ़ गया है. अगर जॉब के लिहाज से देखें तो यह आने वाले समय में हॉट सेक्टर होगा, क्योंकि आज के हाईटेक वर्ल्ड में बच्चों के साथ-साथ युवा भी हाईटेक गेम्स के दीवाने होने लगे हैं, तभी तो इन्हें अब आउटडोर गेम कम और इंडोर गेम ज्यादा पसंद आने लगा है. यही वजह है कि इंडोर गेम्स यानी वीडियो, कम्प्यूटर और मोबाइल गेम्स का बाजार कई गुना बढ़ गया है. जिस रफ्तार से यह सेक्टर बढ़ रहा है, उससे गेम डेवलपर्स की मांग में जबरदस्त इजाफा हुआ है.

गेमिंग वर्ल्ड में विकल्पों की भरमार

गेमिंग मार्केट

मोबाइल गेमिंग का ग्लोबल मार्केट तेजी से बढ़ रहा है. समय के साथ सेल्युलर ऑपरेटर्स की बढ़ती संख्या की वजह से भारत में भी गेम्स डेवलपर्स की मांग बढ़ी है. आज मॉइक्रोसॉफ्ट, एक्स-बॉक्स, सोनी का प्लेस्टेशन-2, गेम साइट्स, इन सभी का जबरदस्त क्रेज बना हुआ है.

रोजगार की संभावनाएं

इस समय रोजगार के लिहाज से यह सेक्टर बेहतरीन ऑप्शन है. क्योंकि कई गेमिंग कंपनियां भारत में अपना सेटअप तैयार करवा रही हैं लेकिन अच्छे गेम डेवलपर्स की काफी कमी महसूस की जा रही है. इस क्षेत्र में जावा, C, C++, 2डी गेम डेवलपर्स, 3डी डेवलपमेंट के जानकारों के लिए असीम संभावनाएं मौजूद हैं. इस फील्ड में कई तरह से काम किया जा सकता है.

कम्प्यूटर गेम प्रोड्यूसर

इसके लिए डिजाइनिंग की जानकारी के अलावा, 3डी मॉड्यूलिंग और टू डी सॉफ्टवेयर का नॉलेज होना जरूरी है, वहीं ऑडियो इंजीनियर के लिए C++, साउंड इंजीनियरिंग के अलावा अन्य लैंग्वेज की जानकारी आवश्यक है वीडियो गेम प्रोड्यूसर का काम पूरे प्रोडक्शन के काम पर नजर रखना होता है. इस तरह के इंजीनियर डिजाइन, आर्ट, क्वालिटी कंट्रोल टीम से साथ मिलकर काम करते हैं

गेम डिजानइर

इनका काम गेम डिजाइनिंग के साथ गेम को फनी बनाना होता है. साथ ही, ये गेम राइटिंग और डायग्राम भी तैयार करते हैं. लीड डिजाइनर पर पूरे डिजाइनिंग विजन, कॉन्सेप्ट, प्रेजेंटेशन, इंप्लिमेंटेशन की जिम्मेदारी लेते हैं. लेकिन इसके लिए टेक्नोलॉजी की जानकारी होने के साथ-साथ आर्टिस्टिक विजन बेहद जरूरी है.

एनिमेटर

एनिमेटर आमतौर पर प्रोग्रामर और सीनियर आर्टिस्ट के साथ गेम के कैरेक्टर के हर पहलू पर काम करते हैं. आप एनिमेटर के रूप में काम करना चाहते हैं तो आपमें 2डी कॉन्सेप्ट आर्ट के माध्यम से 3डी मॉडल्स और 2डी टेक्सचर मैप को तैयार करने की योग्यता होनी चाहिए.

ऑडियो प्रोग्रामर

इस तरह के प्रोग्रामर गेम के लिए ऑडियो तैयार करने के अलावा साउंड इंजीनियरिंग का काम भी करते हैं. वैसे यह फील्ड कंप्यूटर इंजीनियर के लिए बेहतरीन माना जाता है. ऑडियो प्रोग्रामर को गेम में स्पेशल इफेक्ट के इस्तेमाल के लिए साउंड के बारे में अच्छी नॉलेज रखना जरूरी है.

ग्राफिक प्रोग्रामर

गेम को डेवलप करने में ग्राफिक प्रोग्रामर टेक्निकल सपोर्ट देता है लेकिन इसके लिए ग्राफिक प्रोग्रामर को C, C++, डायरेक्ट एक्स, ओपन जीएल, विंडो प्रोग्रामिंग, 3डी पैकेज आदि के बारे मालूम होना चाहिए.

सैलरी पैकेज

देश में गेमिंग की दुनिया में 2डी और 3डी डेवलपमेंट प्रोफेशनल्स की मांग है. इस हाइटेक गेम वर्ल्ड में शुरुआती दौर में ही आपकी सैलरी 2 लाख सालाना हो सकती है.

टॉप गेम डेवलपर्स :

डिजिटल चॉकोलेट, बेंगलुरु
इंडिया गेम्स, मुम्बई
जंप गेम्स, मुम्बई.

ऐसे करें UPSC की तैयारी

आसान लगेगा पूरा सिलेबस

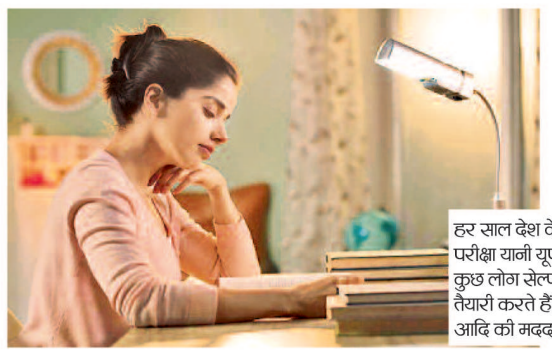

हर साल देश के हजारों युवा सिविल सेवा परीक्षा यानी यूपीएससी परीक्षा में बैठते हैं. कुछ लोग सेल्फ स्टडी करके इसकी तैयारी करते हैं तो कुछ कोचिंग संस्थानों आदि की मदद लेते हैं. यूपीएससी परीक्षा को सबसे कठिन माना जाता है. इसमें बैठने वाले लोग कई महीनों तक सब कुछ त्याग कर बस इसकी पढ़ाई और इंटरव्यू की तैयारी में जुटे रहते हैं. सिविल सेवा परीक्षा से जुड़े कई ऐसे मिथक हैं जो हर किसी के दिलोदिमाग में बसे हुए हैं. अगर आप या आपका कोई करीबी इसकी तैयारी कर रहा है तो आपको ये बातें जरूर पता होनी चाहिए. अच्छी सरकारी नौकरी के लिए यह परीक्षा पास करना जरूरी है.

सबसे कठिन है परीक्षा

आईएएस परीक्षा को देश की सबसे कठिन परीक्षा माना जाता है. दरअसल इस परीक्षा का पास प्रतिशत बहुत कम है. परीक्षा के लिए आवेदन करने वाले लाखों उम्मीदवारों में से सिर्फ आधे ही इस परीक्षा में बैठते हैं. हालांकि, अगर तैयारी दुरुस्त हो तो यह परीक्षा भी किसी भी आम परीक्षा की तरह दी जा सकती है.

कितने घंटे करें पढ़ाई

सिविल सेवा परीक्षा का आयोजन 3 चरणों- प्रारंभिक, मुख्य परीक्षा एवं साक्षात्कार में किया जाता है. हर चरण की तैयारी के लिए अलग रणनीति बनाई जाती है. कुछ लोगों का मानना है कि इसमें पास होने के लिए 16-18 घंटों की पढ़ाई जरूरी है, जबकि ऐसा है नहीं. सफलता को पढ़ाई के घंटों से नहीं आंका जा सकता है. हर स्टूडेंट दूसरे से अलग होता है. अगर अच्छी तरह से पढ़ाई की जाए तो दिन के 8 घंटे भी बहुत होते हैं.

कोचिंग और मीडियम से नहीं पड़ता है फर्क

कुछ लोगों को लगता है कि इस परीक्षा को पास करने के लिए कोचिंग करना जरूरी है, जबकि ऐसा है नहीं. आजकल हर चीज एक क्लिक पर मौजूद है. अगर आप चाहें तो खुद से भी तैयारी कर सकते हैं. इसी तरह से इसमें यह भी फर्क नहीं पड़ता है कि आप हिन्दी माध्यम से हैं या अंग्रेजी से. आप किसी भी मीडियम से हों, बस आपके कॉन्सेप्ट क्लियर और कॉन्फिडेंस कमाल का होना चाहिए.

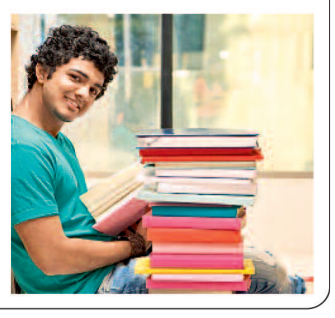

अपने वर्क परफॉर्मेंस को ऐसे करें बेहतर

एंटरप्रेन्योर के तौर पर सफल होने के लिए जरूरी है कि आप अपने वर्क परफॉर्मेंस में सुधार करते रहें. आपको अपना हर दिन प्रोडक्टिव बनाना होगा और साथ ही खुद को रोज बेहतर बनाने पर जोर देना होगा, ऐसा करके ही आप सफल हो पाएंगे. आइए जानते हैं कि आप वर्क परफॉर्मेंस कैसे सुधार सकते हैं.

काम पर जल्दी पहुंचें

इसका मतलब यह नहीं है कि आप बहुत पहले ही काम करने के लिए ऑफिस पहुंच जाएं. हालांकि, अगर आप अपने काम को अच्छे से करना चाहते हैं तो समय से थोड़ा पहले ऑफिस पहुंच सकते हैं. इससे आप खुद को उस काम के लिए तैयार कर सकेंगे और काम के लिए सही योजना बना पाएंगे.

अपने लिए नोट्स छोड़ें

हो सकता है कि ऐसा करना शुरुआत में आपको थोड़ा अजीब लगे, लेकिन ऐसा करने से आप अपना परफॉर्मेंस यकीनन बेहतर कर पाएंगे. जब भी आपको कोई नया आइडिया आए या आप नया प्लान बनाएं, तो अपने लिए नोट्स जरूर छोड़ें.

वर्कस्पेस हो व्यवस्थित

ऑफिस आपका दूसरा घर होता है, जहां आप अधिकतर समय बिताते हैं. इसलिए रोज अपने वर्क स्पेस को संभालने के लिए वक्त जरूर निकालें.

इंटरनेशनल इंटर्नशिप

विदेश में जॉब पाने का रास्ता

जॉब के लिए छात्रों के एजुकेशन के साथ इंटर्नशिप महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, वहीं अगर इंटर्नशिप किसी इंटरनेशनल कंपनी में किया जाए तो इससे छात्र को अपने वर्क को प्रोफेशनल तरीके से समझने में और मदद मिलती है. लगभग सभी मल्टीनेशनल कंपनियां अपने यहां इंटर्नशिप के लिए इंटर्न को नियुक्त करती हैं. सामान्य तौर पर इंटर्नशिप छात्रों के लिए एक अतिरिक्त लाभ है, वहीं कंपनियां भी ऐसे छात्रों को जॉब का ऑफर देती हैं, जो पहले इंटर्नशिप कर चुके होते हैं. कंपनियों का मानना है कि ऐसे छात्र वर्क प्लेस के माहौल से अच्छी तरह वाफिक होते हैं और प्रोफेशनल तौर-तरीके से अवगत होते हैं.

फायदे

इंटर्निंग के विभिन्न लाभ हैं, इससे न केवल अनुभव बढ़ता है, बल्कि इससे अर्जित ज्ञान भी करिअर को आगे बढ़ाने में मदद करता है. आज के समय में जब दुनिया की मार्केट एक साथ जुड़ रही है और प्रतिस्पर्धी बढ़ रहा है. तब आप सिर्फ एजुकेशन के दम पर अपने पैर इस मार्केट में नहीं टिका सकते. आज के समय में इंटर्नशिप जरूरी है, वहीं अगर आपने विदेश से इंटर्नशिप कर ली तो आपके करिअर को पंख लग जाएंगे. इंस्टीट्यूट फॉर द इंटरनेशनल एजुकेशन ऑफ स्टूडेंट्स ने हाल ही में अपने उन छात्रों पर एक सर्वेक्षण किया, जो विदेश में इंटर्नशिप कर चुके हैं. सर्वे के अनुसार 84 प्रतिशत छात्रों ने कहा कि विदेश में इंटर्नशिप ने उन्हें स्किल डेवलप करने और नौकरी पाने में काफी मदद की. वहीं 89 प्रतिशत छात्रों ने कहा कि इंटर्नशिप पूरी होने के तुरंत बाद ही उन्हें जॉब मिल गई.

खास तरीके से बनाएं सीवी

दूसरे देश में प्रोफेशनल एक्सपीरियंस प्राप्त करना आपको तेजी से प्रतिस्पर्धी वैश्विक श्रम बाजार में बाकी लोगों से अलग करता है. अगर आपने विदेश में एक या एक से अधिक इंटर्नशिप कर रखा है तो यह आपके रिज्यूमे को चमकाने और अच्छी जॉब दिलाने में मदद करेगा. यह इंटर्नशिप साबित करता है कि आपके अंदर उस जॉब के लिए सभी स्किल मौजूद हैं.

क्षेत्रों की विविध श्रेणी चुनें

आप जिस भी क्षेत्र में रुचि रखते हैं जैसे- आईटी, एचआर, मार्केटिंग, रिसर्च, आर्ट, डिजाइन, मीडिया, लॉ, इंजीनियरिंग, फार्मा, हॉस्पिटैलिटी, एमजीएमटी और बैंकिंग आदि. यहां आपको इंटर्नशिप प्लेसमेंट के बेहतरीन मौके मिलेंगे. विदेशों में इंटर्न करने के लिए आपके चुनाव में विविधता एक बहुत बड़ा प्रभावक बन सकता है. आज के समय में कई इंटर्नशिप और प्लेसमेंट प्रदाता हैं जो विदेश में आपके लिए किसी भी संगठन में सही इंटर्नशिप करने में आपकी मदद कर सकते हैं. एक इंटरनेशनल इंटर्नशिप आपको उस उद्योग में एक वैश्विक नेटवर्क बनाने का अवसर प्रदान करेगी, जिसका आप सपना देख रहे हैं.

चाहते हैं अच्छा अप्रेजल....

हर अच्छी कंपनी में तय समय पर एंप्लॉइज का इंक्रीमेंट जरूर होता है. इसे अप्रेजल टाइम कहते हैं. इसमें एंप्लॉई के काम करने का तरीका देखते हुए उसके इंक्रीमेंट और प्रमोशन का हिसाब-किताब तय किया जाता है. अगर आप अच्छा अप्रेजल चाहते हैं तो आपको इस पूरे प्रोसेस को समझते हुए अपने मैनेजर पर अच्छा इंप्रेशन जमाना होगा.

सतर्कता से करें मूल्यांकन

ज्यादातर कंपनियां सेल्फ अप्रेजल फॉर्म भरवाती हैं. यह मैनेजर के सामने अपने सभी कामों को सामने लाने का सबसे अच्छा मौका होता है. इस काम को काफी गंभीरता के साथ पूरा करना चाहिए. जिन कामों को आपने अपने KRA से आगे जाकर किया है, उनका जिक्र करने में बिलकुल न हिचकिचाएं.

याद करें सारी उपलब्धियां

अपनी और टीम की सभी उपलब्धियों को याद करके उनका रिकॉर्ड बना लें. इससे अप्रेजल मीटिंग में बॉस या एचआर के सामने इन पॉइंट्स को रखना आसान होगा.

समझें गलतियां और सुधार की रखें कोशिश

अप्रेजल मीटिंग में दो या उससे ज्यादा भी लोग शामिल हो सकते हैं. उनके सामने अपनी बात फुल कॉन्फिडेंस के साथ रखें. अगर मीटिंग में आपकी किसी गलती के बारे में बात की जा रही है तो उसे स्वीकार कर सुधार की गुंजाइश की बात करें. अपने अप्रेजल प्रोसेस को लास्ट तक कंप्लीट करें. उसे कभी भी बीच में न छोड़ें. मीटिंग में समस्याओं के समाधान लेकर जाएं ताकि मैनेजर को लगे कि आप कंपनी और काम के प्रति समर्पित हैं.

आयुर्वेद 10 आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियाँ

आयुर्वेद में स्वास्थ्य संबंधी हर समस्या का इलाज मौजूद है, जो समस्या से राहत ही नहीं देता बल्कि समस्या को जड़ से समाप्त करता है। आइये जानते हैं ऐसी 10 आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों के बारे में जो आपको बिना किसी साइड इफेक्ट के स्वास्थ्य लाभ देंगी और सेहत समस्याओं से निजात दिलाएंगी --

1. **पुदीना** - पुदीने की पत्तियां खून साफ करती हैं, सिरदर्द ठीक करती हैं, खराब गले को राहत पहुंचाती हैं, उल्टियों को रोकती हैं और दांतों की दिक्कतों से भी निजात दिलाती हैं। पुदीना ऐंटी-बैक्टीरियल भी होता है जो शरीर में बैक्टीरिया पैदा होने से रोकता है।
2. **हल्दी** - हल्दी का इस्तेमाल हम लगभग सभी हिन्दुस्तानी सब्जियों या खाद्य पदार्थों में करते हैं। इसकी जड़ों और पत्तियों में औषधीय गुण होते हैं। इसमें सबसे अच्छे ऐंटी-बैक्टीरियल गुण हैं।इससे जोड़ों के दर्द, आर्थराइटिस, पाचन विकार, दिल और लिवर की बीमारियों से लड़ने की क्षमता है। यहां तक कि यह कैंसर सेलों को खत्म करती है और स्किन के लिए भी अच्छी होती है।
3. **लेमन ग्रास** - यह आमतौर पर उत्तर भारत में उगाया जाता है। इसे चाय में डालकर पीने का चलन है। लेमन ग्रास शरीर, जोड़ों, सिर और मांसपेशियों के दर्द से निजात दिलाती है और स्ट्रेस से भी बचाती है।
4. **सफेद कमल** - सफेद कमल की पत्तियां, फूल, बीज और जड़ों से हैजा, पेट की बीमारियों, कब्ज और आंखों के इन्फेक्शन का इलाज किया जाता है। सफेद कमल के बीजों को भी कामोत्तेजक के रूप में इस्तेमाल किया जाता है।
5. **गुलाब** - गुलाब की पत्तियां खाने से दिल की सेहत बनती है, सूजन घटती है, ब्लड सर्कुलेशन बढ़ता है और ब्लड प्रेशर कम होता है। गुलाब की पत्तियों से भी स्ट्रेस, मासिक पीड़ा, अपच और अनिद्रा से निजात मिलती है।
6. **मेहंदी की पत्तियां** - मेहंदी की पत्तियां मूत्रवर्धक होती हैं। वे दर्द को कम करती हैं और शरीर को डीटॉक्स करती हैं। कब्ज के इलाज में भी इनका इस्तेमाल हो सकता है। छाले, अल्सर, चोट, बुखार, हैमरेज और मासिक दर्द से भी मेहंदी की पत्तियां छुटकारा दिलाती हैं।
7. **सब्जा** - सब्जा को फालूदा में कूलिंग एजेंट के तौर पर डाला जाता है। इसमें ओमेगा-3 फैटी एसिड पाया जाता है। इनके सेवन से इम्युनिटी बढ़ती है, ब्लड प्रेशर कम होता है और दिल की सेहत बनती है। इन्हें खाने से स्किन अच्छी होती है और सूजन घटती है।
8. **दालचीनी** - भारतीय मसालों में दालचीनी अहम है। इसके सेवन से दर्द कम होता है और अकड़न दूर होती है। यह किडनी को डिटॉक्स करता है और सांस संबंधी दिक्कतें दूर कर ब्लड सर्कुलेशन बढ़ाता है।
9. **इसबगोल** - इसबगोल की भूसी कब्ज का अचूक इलाज है। यह एक तरह की घुट्टी है जो आंतों को रिलैक्स करती है। इसे पीसकर जोड़ों पर लगाने से जोड़ों के दर्द से भी आराम मिलता है।
10. **कपूर** - इस पौधे के अनगिनत फायदे हैं। इसकी छाल से बैक्टीरिया और फंगस से निजात मिलती है, दर्द से आराम मिलता है, यह कामोत्तेजक का भी काम करता है और मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ाता है।कपूर के तेल से खांसी, दमा, हिचकी, लिवर की दिक्कतों और दांत के दर्द का इलाज किया जाता है। इसे मांसपेशियों या नसों का दर्द ठीक करने और डिप्रेशन का इलाज करने के लिए भी इस्तेमाल किया जाता है।

कमलेश शर्मा, जयपुर

मैं विजेता...

मन की बात...

दिल्ली के एक छोटे से गाँव (किलोकरी) में जन्मी पली बढ़ी मैं, पांच बड़े भाइयों की बहन होने के नाते कुछ जिद्दी स्वभाव की थी। शायद इसका कारण रहा होगा, पांच भाइयों मे पहली लड़की का होना। 12-13 बरस की होते होते ये अहसास होने लगा की परिवार के अन्य बच्चों से कुछ अलग हूँ। जहाँ भाइयों को हर जगह जाने की इजाज़त थी, वहीं मुझे हर जगह नहीं भेजा जाता। अँधेरा होने पर तो घर से बाहर जाने की सख्त मनाही थी। जब कि भाई लोग 11-12 बजे तक भी घर से बाहर घूमते रहते। कारण पूछने पर कहा जाता कि तुम लड़की हो मर्यादा में रहो। मर्यादा सिर्फ लड़की के लिए? मेरी समझ से परे था। ऐसे माहौल में मैंने स्कूली शिक्षा पूरी की। उस समय तक मेरे दो तीन भाई उच्च शिक्षा प्राप्त कर उच्च पदों पर नियुक्त हो चुके थे। उन्हे देख मेरे मन में भी ये चाहत जागने लगी ली मैं भी उच्च शिक्षा प्राप्त कर किसी अच्छे पद पर नौकरी करूंगी। मगर एक लड़की की सीमाएं शायद समाज ही तय करता है। वो समाज जो पुरुष प्रधान है।उसी समाज का हिस्सा मेरे घर का पुरुष वर्ग भी था।

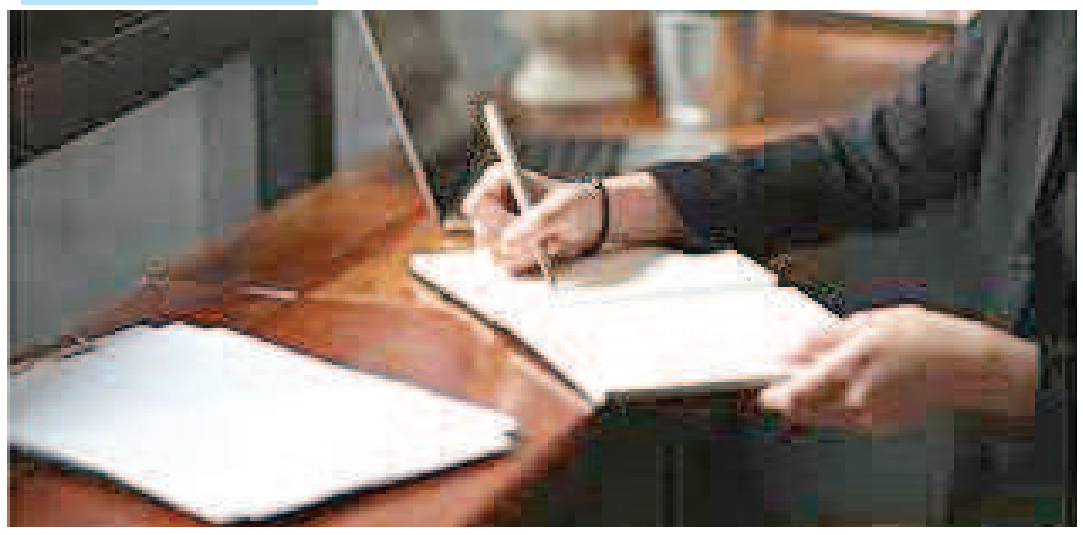

स्कूली शिक्षा पूरी करने के बाद जब मैंने कॉलेज में दाखिला लेना चाहा, तो घर के पुरुष वर्ग ने इसकी इजाजत नहीं दी। मैं आगे पढ़ना चाहती थी। जिद्दी तो मैं थी ही, किसी तरह मैने स्नातक तक पढ़ने की इजाजत ले ली और बाक़ी की शिक्षा पत्राचार से पूरी की। माता पिता बुजुर्ग हो चले थे, उन्हे मेरी शादी की चिंता सताने लगी। ऐसी बात नहीं थी कि मैं शादी नहीं करना चाहती थी, मगर उससे पहले अपने भाइयों की तरह ही पढ़ लिख कर अपने पैरों पर खड़ा होना चाहती थी, मगर घर वालों ने इसकी इजाजत नहीं दी। यही दलील देते रहे कि लड़की की मर्यादा संस्कारिक बन्धनों में बंध कर ही सुरक्षित है। अब जो करना है अपने घर जा कर करना, मैं विवाह सूत्र में बांध दी गई।

अभी तक यह नहीं समझ पाई हूं कि स्त्री का अपना घर कौन सा है? मेरे विचार से तो लड़की का या तो मायका होता है या ससुराल। और अगर वह अलग घर बसा भी ले तो वह घर पति का ही तो कहलाता है? लड़कियाँ तो अपने घर की तलाश में ही उम्र गुज़ार देती है।

मुझे भी कुछ ऐसा ही महसूस हो रहा था।

पतिदेव एक व्यस्त पति थे। अक़सर घर से बाहर टूर पर रहते। संयुक्त परिवार के कड़े नियमों का पालन करते करते कब दिन बीत जाता पता भी न चलता। जल्द ही मैं दो बच्चों की माँ भी बन गई। नित्य कर्म के बाद घंटों रसोई की परिक्रमा करते रहना, दूध उबालना नाश्ता तैयार करना, टिफिन पैक करना, उठने और बच्चों के स्कूल जाने तक समय कब पंख लगा उड़ जाता, पता ही नहीं चलता। पतिदेव भी सुबह चाय बनाने से लेकर ऑफिस जाने तक साथ लगाये रहते। कपड़े निकालो, नाश्ता दो,टिफिन तैयार हुआ या नहीं, मोबाइल दो, बैग पकड़ाओ, यहाँ तक की हेलमेट पकड़ाना भी मेरे कामों मे शामिल था। कहीं चूक हो जाती तो दोष मेरे सर ही आता। देखा देखी बच्चे भी इसी श्रेणी मे आने लगे थे। ऐसे माहौल में जब कभी परिवार से आगे पढ़ने या नौकरी करने की इज़ाजत मांगती तो उत्तर नारात्मक ही मिलता। अब और कोई रास्ता नहीं था। मैं उनकी सोच को तो नहीं बदल पाई, खुद को उनकी सोच के अनुसार ढाल उनकी सफलताओं में अपनी सफलता ढूंढने लगी। पुरुष चाहे कितना भी आधुनिक होने का दावा करे, महिला के प्रति उसकी मानसिकता कुण्ठा ग्रस्त ही है। उसे लगता है कि स्त्री वह बेल है, जिसे हर पल सहारे की ज़रूरत है। अपने वजूद को पहचानना स्वतन्त्र वातावरण मे सांस लेंना, उसका हक़ नहीं। अपने आत्म सम्मान के लिए उसे दूसरे पर ही निर्भर रहना है। उसका जीवन परआश्रित है, समर्पण का है। उसका महीनो से सालों तक का सफर यूं ही कट जाता है। ऐसे में मेरे दिल की आवाज कौन सुनता? ऐसा लगता जीवन में सब कुछ होते हुए भी कुछ तो ऐसा है जो अधूरे पन का अहसास कराता है। दिल की तमन्ना दिल मे रखते रखते कब मैं प्रौढ़ा अवस्था में जा पहुँची पता ही नहीं चला। अब शरीर मे ना समर्थ रहा है ना उमंग। युवा अवस्था की बात ही कुछ और होती है। दिल में कुछ कर गुजरने की ख़्वाहिश रहती है। एक गृहणी गृहस्थी के जंजाल मे फँस कर सब कुछ भूल जाती है। मन को मारने की आदत सी हो जाती है। ऐसे में अपनी जुबान को कागज पर उतारना कितना सकून देता है ,एक मुक्त भोगी ही जान सकता है।कलम हाथ में लिए जो मैं महसूस कर रही हूँ, उसे बयान करना आसान नहीं है। कलम थामना और उसे शब्दों मे पिरोना एक एकांत कर्म है। जो हम जैसी गृहणियों के लिए किसी बड़ी चुनौती से कम नहीं। सीमित ज्ञान और अभिव्यक्ति अतिरिक्त तनाव है। जब सीमाएं टूटती हैं तो आलोचनाएं भी होती हैं।

घरेलू काम काज बच्चों, रिश्तेदारो की देख रेख शत प्रतिशत स्त्री के कंधो पर ही होती है।

लेखन के बाद प्रकाशन के लिए भागदौड़ एक और चुनौती है। रिश्तों की भीड़ में चन्द सूरतें ही ऐसी होती है, जो हौसला देती हैं। रुकावटें कुछ कम नहीं, पर मैं तैयार हूँ। अब जब कलम हाथ में है, तो फ़िक्र काहे की? अब अपनी उन परम्पराओ का बोझ आने वाली पीढ़ी को नहीं देना चाहती। उनके निर्णय उनके अपने होने चाहिए।उनकी ख़्वाहिश, ज़िंदगी जीने की चाहत, उनकी खुशियाँ, किसी बंदिश की मोहताज न हो। यही चाहती हूँ मैं। अब बीते कल में नहीं जाना चाहती। आने वाले कल के अकेलेपन का अहसास भी नहीं होता। ज़िंदगी के नए इतिहास की इबादत लिखना चाहती हूँ और इसी तरह मैंने लिखना शुरू किया।

मन चाहा न मिले तो दुबारा कोशिश करें। ऐसे ही मैंनेअपनी अभिव्यक्ति को कागजों पर उड़ेलना शुरू किया, और मौका पाते ही एक पत्रिका मे भेज दिया। उस पत्रिका ने भी उसे खुले दिल से अपनाया, और अपनी पत्रिका मे स्थान दिया। कुछ लेख पत्र पत्रिकाओं में छपने लगे है। ऐसे में मेरी एक सखी, जो 'नारी कभी ना हारी' साहित्य संस्थान की अध्यक्ष थीं मुझे हौसला दिया और अपने संस्थान की सदस्य बना लिया। आज इस संस्थान की सदस्य बन कर गौरवशाली महसूस करती हूँ। जीवन की आपाधापी मे खोया विश्वास लौटने लगा है। आज मेरा जन्म दिन है, आज से मुझे फिर से जीना है, सिर्फ अपने लिये,अपने मन का करने के लिये।

अभी अभी पतिदेव से जन्मदिन का तोहफा मिला,जानते है तोहफा देते समय उन्होने क्या कहा? 'ये लो अपना तोहफ़ा। पूरे पांच रुपये का है।' पहले तो मै सकपकाई, सोचा, पांच रुपए के तोहफे के लिये मै ही बची थी क्या? फिर जब तोहफे के रूप मे एक क़लम देखी तो चौंक उठी मैं। उस पर उनकी मौन स्वीकृति, और मूक भाषा भी मैंने पढ़ ली थी। कंधे पर हाथ रख धीरे से बोले, अब हम ज़िम्मेदारियो से मुक्त हो चुके हैं, वादा करो, रोज़ लिखा करोगी।

खाना-ख़ज़ाना

टमेटो मैक्रोनी पास्ता

प्रिया विनोद धनेचानी
जयपुर राजस्थान

सामग्री

250 ग्राम मैक्रोनी पास्ता
4-5 मध्यम आकार के लाल टमाटर
1 चम्मच सोया सॉस
1/2 चम्मच चिली सॉस
1 चम्मच टमाटो सॉस
2 चम्मच पास्ता या चाउमीन मसाला
2 बड़े चम्मच तेल
नमक स्वादानुसार

विधि :

पास्ता को उबाल लें और पानी अच्छी तरह निकाल कर उस पर तेल लगा लें। टमाटरों को 2 मिनट के लिए गर्म पानी में डालकर ढक दें, फिर इनका छिलका उतारकर प्यूरी बना लें। अब एक कड़ाही में तेल गरम करें। इसमें टमाटर की प्यूरी को 2 मिनट तक पकाएं। अब सभी मसाले और सॉस डालकर अच्छी तरह से मिला लें। अंत में पास्ता डालकर मिलाएं। 2 मिनट फुल आंच पर पकने दें। टमेटो मैक्रोनी पास्ता तैयार है।

जान है तो जहान है बनाम जहान है तो जान है!

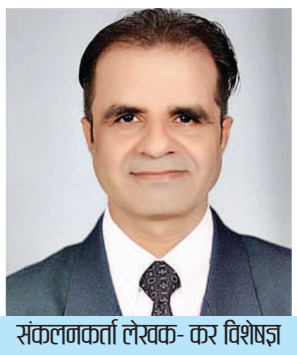

संकलनकर्ता लेखक- कर विशेषज्ञ
एडवोकेट किशन सनमुखदास
भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

नागरिकों को स्वतः दीर्घकालीन व्यवहार परिवर्तन विकसित करने की ज़रूरत

जान है तो जहान है मुहावरे का अर्थ अब बदलकर जहान है तो जान है कहने पर सृष्टि में मजबूर है मानव!

कोरोना महामारी की पहेली अभी भी अबूझ बनते जा रही है। कोविड-19 से डेल्टा, डेल्टा प्लस अब ओमिक्रान! बड़ी शिद्दत और मेहनतसे वैश्विक रूप से वैक्सिन तैयार हुई, लोगों को दो-दो डोज़ भी लगे, अब बूस्टर डोज़ (प्रकाशनरी खुराक़) की तैयारी! अब आम आदमी से जानकारों, बुद्धिजीवियों को भी समझ में आने लगा है कि मानव के पास प्रकृति की दी हुई प्रतिरक्षा प्रणाली है जो कोरोना से भी बचा सकती है! और अन्य बीमारियों से बचाकर स्वास्थ्य को फिट रखने में हिट है! वह है नागरिकों को अपना दीर्घकालीन व्यवहार परिवर्तन विकसित करने की जरूरत! साथियों हमारे बड़े बुजुर्ग की दशकों पूर्व कहावत है जान है तो जहान है। याने सबसे पहली प्राथमिकता अपनेशारीरिक जीवन की सुरक्षा करना है, उसके बाद जहान है! जिसके लिए आदि अनादि काल से पैदल चलना, साइकिल से चलना, मेहनत करना, व्यायाम करना, योगा करना, रात जल्दी सोना, सुबह जल्दी उठना, इत्यादि सभी व्यवहार माननीय दिनचर्या में कूट-कूट कर भरे थे। जिसके कारण उनकी शारीरिक सुरक्षा इन बीमारियों से अधिक होती थी। साथियों बात अगर हम इस नए ज़माने की आधुनिक प्रणाली की करे तो उपरोक्त पौराणिक दिनचर्या का मानव जीवन से विलुप्तता के कगार पर है।

आधुनिक नवयुवकों में कुछ अपवादों को छोड़ दें तो अधिकतम युवक इस दिनचर्या का पालन नहीं करते बल्कि उसका उल्टा हो गया है! याने जहान है तो जान है! वर्तमान बदलते परिवेश में यह उल्टा मुहावरा न केवल एक फैशन सा हो गया है बल्कि जीवन की ज़रूरत भी बन गया है। आज जीवन को बचाने के लिए जितनी ज़रूरत शारीरिक इम्यूनिटी की है उतनी ही आर्थिक इम्युनिटी की भी है! साथियों बात अगर हम पिछले वर्ष 2020 की करें तो इस मुहावरों के तार्किक उक्ति से जोड़ने को अप्रैल 2020 से ही बल मिला था जब पीएम के साथ सभी राज्यों के मुख्यमंत्रियों की 4 घंटे चली वर्चुअल बैठक में जान भी जहांन भी का मानवीय तर्क दिया गया था ठीक उसी समय वित्तमंत्री भी वरिष्ठ अधिकारियों के साथ अर्थव्यवस्था को गतिमान बनाए रखने के उपायों पर गहन विचार कर रहीं थी याने आज के युग में जान के साथ जहान का चिंतन करना भी जरूरी है! साथियों यह सोच कुछ हद तक ठीक भी है परंतु हमें शारीरिक इम्यूनिटी के लिए केवल दीर्घकालीन व्यवहार परिवर्तन विकसित करना है जो हमारे पूर्वज करते थे! आज की पीढ़ी का व्यवहार कुछ पाश्चात्य संस्कृति में रंगता हुआ दिख रहा है। आज के युवा दो कदम पर भी पैदल नहीं बल्कि गाड़ी घोड़े पर बैठकर जाना पसंद करेगा, सुबह देर से उठना, व्यायाम नहीं करना, मेहनत, योगा अपनी शारीरिक सुरक्षा नहीं करना एक फैशन सा बन गया है, जो हमारे शारीरिक कष्ट बीमारियों को जन्म देता है और महंगी स्वास्थ्य सेवाओं को आकर्षित कर लाखों-करोड़ों व्यर्थ में चले जाते हैं जिस पर वर्तमान समय में मनन चिंतन करना तात्कालिक ज़रूरी है एवं पौराणिक मुहावरे जान है तो जहान है को एक मजबूत स्थिति में लाकर खड़ा करके उसका पालन खुद भी करना है और दूसरों से भी करवाना है। साथियों बात अगर हम खुद के स्वास्थ्य की करें और फिर स्वस्थ रहने की करें तो हमें जहान नहीं अपने निजी व्यवहार में दीर्घकालीन परिवर्तन विकसित करना है जिसे अब 1 से 26 जनवरी 2022 तक आजादी का अमृत महोत्सव के तहत नगर के नेताओं और नागरिकों को पैदल चलने और साइकिल चलाने की चुनौतियों का शुभारंभ किया गया है!!! साथियों बात अगर हम आवास व शहरी कार्य मंत्रालय द्वारा जारी पीआईबी की करें तो, 26 जनवरी, 2022 तक चलने वाले 3 सप्ताहों के दौरान, प्रतिभागियों को अपने पैदल चलने,दौड़ने और साइकिल की गतिविधियों को प्रतिदिन ट्रैक करने की आवश्यकता होगी और चुनौती के अंत में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले नगरों को पुरस्कृत किया जाएगा। फ्रीडम 2 वॉक एंड साइकिल इंटर-सिटी चैलेंज में शामिल होने के इच्छुक नागरिक वेबसाइट के माध्यम से या नगर के शहरी स्थानीय निकाय के आधिकारिक सोशल मीडिया हैंडल द्वारा साझा किए गए पंजीकरण लिंक से अपने संबंधित शहर के लिए पंजीकरण कर सकते हैं। ये कार्यक्रम पैदल चलने और साइकिल चलाने की दिशा में नागरिकों में दीर्घकालिक व्यवहार परिवर्तन विकसित करने और प्रत्येक शहर में शहर के नेताओं को पैदल चलने और साइकिल चलाने के चैंपियन बनाने के मकसद से पहले के कार्यक्रम की गति को आगे बढ़ाएंगे।

इंटर-सिटी सिटीजन चैलेंज के लिए अब तक 75 शहरों ने पंजीकरण कराया है। साथ ही 65 नगरों और 232 नेताओं, जिनमें आयुक्त, अतिरिक्त आयुक्त/संयुक्त आयुक्त/उपायुक्त, स्मार्ट सिटी के सीईओ और प्रमुख एसपीवी अधिकारी शामिल हैं, ने सिटी लीडर्स अभियान के लिए अब तक साइन अप किया है। आजादी का अमृत महोत्सव समारोह के तहत 1 से 26 जनवरी 2022 के दौरान मंत्रालय का स्मार्ट सिटी मिशन फ्रीडम 2 वॉक एंड साइकल चैलेंज फॉर सिटी लीडर्स, और इंटर-सिटी फ्रीडम 2 वॉक एंड साइकिल चैलेंज फॉर सिटिजन्स नाम से दो अद्वितीय राष्ट्रीय स्तर की चुनौतियों का शुभारंभ किया है। इन चुनौतियों का उद्देश्य 1-3 अक्टूबर, 2021 के बीच आयोजित आजादी का अमृत महोत्सव- फ्रीडम 2 वॉक एंड साइकिल नामक राष्ट्रव्यापी अभियान को सफल बनाना है। अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि जान है तो जहान है बनाम जहान है तो जान है। पर मनन चिंतन करना है तथा नागरिकों में दीर्घकालीन व्यवहार परिवर्तन विकसित करने की अत्यंत तात्कालिक ज़रूरत है क्योंकि जान है तो जहान है मुहावरे का अर्थ अब बदलकर जहान है तो जान है कहने पर सृष्टि में मानव मजबूर है। जिसको पूर्वकालीन मुहावरे तक सीमित रखना है।

बुजुर्गों से लेंगे आशीर्वाद तो खुशहाल बनेगा नया साल

आज साल 2021 का आखिरी दिन है, ऐसे में हमें नए साल का स्वागत करना चाहिए. पिछले साल की सभी यादों से सीख लेकर नए साल में आगे बढ़ना चाहिए. इस मौके पर आप भी अपने बड़े-बुजुर्गों से नए साल का आशीर्वाद लें, उन्हें सम्मान दें और आनेवाले नये साल को खुशहाल बनाएं. बुजुर्ग समाज की नींव होते हैं, जिनका मार्गदर्शन ही सही रास्ता दिखाता है. बुजुर्गों की सेवा करने से खुशहाली के द्वार खुलते हैं. उनका तिरस्कार करने वालों को ईश्वर भी माफ नहीं करता है. वे हम सभी को वटवृक्ष की तरह छाया देते हैं. हमारा कर्तव्य है कि आनेवाले नये साल में उनकी सेवा और सम्मान करें. बच्चों को चाहिए कि आनेवाले नये साल में वह अपने बड़ों के साथ ज्यादा समय बिताएं. उनसे जीवन के अनुभव सुनें व उनके साथ नये साल के अपने संकल्पों को शेयर करें और उनसे सलाह लें. इसके अलावा आने वाले नये साल में आप अपने बड़े बुजुर्गों की हर छोटी से छोटी खुशी का ध्यान रखें और उनकी जरूरतों को पूरा करें.

असली संपत्ति

जिस घर में बुजुर्ग हैं, वे भाग्यशाली हैं क्योंकि बुजुर्ग ही हमारी असली संपत्ति हैं. उनका आशीर्वाद, मार्गदर्शन और प्यार ही हमारी ताकत है जिसके दम पर ही हम जीवन में सफल होते हैं. जीवन में व्यक्ति अपने दम पर धन-संपदा सब कुछ कमा सकता है, परंतु उसका जीवन खुशहाल तभी होगा जब उसे वृद्धजनों का आशीर्वाद मिलेगा. इसीलिए हमारी भारतीय संस्कृति में यह संज्ञा दी गई है कि ईश्वर की पूजा से बड़ा कोई कार्य है तो वह है अपने माता-पिता की सेवा. हमारे धर्मग्रंथों में भी बुजुर्गों के चरणों में स्वर्ग की बात कही गई है.

पोते-पोतियों के पहरेदार

बचपन किलकारियां भरता, आजाद और उन्मुक्त सा इधर-उधर उछलता नजर आता है. बच्चों की इसी हंसी पर बड़े बुजुर्ग कुछ भी कुर्बान करने को हमेशा तैयार रहते हैं. वे अपने पोते-पोतियों के पहरेदार बन जाते हैं जिनके संरक्षण में मासूम बचपन खिलखिलाता है. परिवार में बड़े हों तो बच्चे उनसे अपनी समस्याएं और विचार बांट सकते हैं. यदि परिवार एकाकी हो तो बच्चे बाहर वालों के साथ आसानी से घुलमिल नहीं पाते. पैरेंट्स अगर वर्किंग हैं तो अकेला बच्चा क्या करे! वास्तव में दादा-दादी या नाना-नानी एक सलाहकार, दोस्त और एक मददगार की भूमिका निभाते हैं.

परामर्शदाता का काम

दादा-दादी से कहानियां सुनकर बच्चों को अच्छे संस्कार मिलते हैं. बच्चों में बड़ों का आदर करने, मिलजुल कर रहने और मिल-बांट कर खाने की आदतें विकसित होती हैं. ये सभी बातें संयुक्त परिवार में रहने पर ही संभव हैं. किसी भी तरह की तनाव की स्थिति या समस्या होने पर बड़े-बुजुर्गों की मौजूदगी और उनका अनुभव एक परामर्शदाता का काम करता है. संयुक्त परिवार में बच्चे अनुशासन और संस्कार सीखते हैं. जब आपको बच्चे अपने माता-पिता का सम्मान करते देखते हैं तो वे भी यह सब अपने जीवन में अपनाने को तत्पर रहते हैं.

निःस्वार्थ भावना से प्यार

संसार में केवल बुजुर्ग ही ऐसे होते हैं, जो अपने बच्चों से निःस्वार्थ भावना से प्यार करते हैं. वे ममता की मूर्ति होते हैं. आज के स्वार्थी युग में बच्चों को अपने बुजुर्गों से प्यार करने का कोई न कोई कारण होता है. लेकिन बुजुर्ग अपने बच्चे से हर स्थिति में बिना किसी शर्त के प्यार करते हैं. वह बिना किसी शिकायत के अपने बच्चों के लिए कई बलिदान देते हैं. बुजुर्ग माता-पिता तब खुश होते हैं जब उनका बच्चा खुश होता है. वे अपने बच्चों की आंखों में आंसू नहीं आने देते. माता-पिता अपने बच्चों की छोटी से छोटी इच्छा पूरी करने का हर प्रयास करते हैं.

लाइफ स्टाइल

उनका अनुभव हमारा मार्गदर्शन

हमारे बड़ों ने हमसे ज्यादा जिंदगी जी है. अपनी जीवनशैली के दौरान उन्होंने हर तरह की मुश्किलों और बाधाओं को अनुभव किया है. वह हमसे बेहतर हर समस्या का समाधान जानते हैं. वो अनुभव और ज्ञान के सरोवर हैं. भले ही, पहले समय में जीवन अलग था और हो सकता है उनके सामने आने वाली समस्याएं भी अलग हों, यह भी संभव है कि वे इस तेज प्रौद्योगिकी दुनिया के साथ चलने में सक्षम न हों, लेकिन फिर भी उनके पास साहस, धैर्य और अनुभव युवा पीढ़ी की तुलना में अधिक बेहतर है, जो लोग अपने बड़े बुजुर्गों के मार्गदर्शन में होते हैं, वे कभी अपने रास्ते से नहीं भटकते हैं. सच्चाई यही है कि हमारे बड़े-बुजुर्गों के पास अनुभवों का खजाना होता है और अगर बच्चे अपने बड़ों की छत्रछाया और मार्गदर्शन में बड़े होते हैं तो वह जीवन में अच्छी आदतें सीखते हैं और नए मुकाम हासिल करते हैं.

48 साल की एक्ट्रेस ऐश्वर्या राय की खूबसूरती का हर कोई दीवाना है. ऐश्वर्या की हाइट से लेकर स्किन तक सब कुछ मानो परफेक्ट सा है. उनकी खूबसूरत आंखें, सुंदर बाल, फ्लॉलेस स्किन 48 की उम्र में भी किसी 30 की उम्र की महिला जितनी यूथफुल और ग्लोइंग नजर आती है.

सीनियर STAR

उबटन लगाकर त्वचा चमकातीं

यूथफुल ग्लोइंग ऐश्वर्या

जिम को प्राथमिकता नहीं देतीं ऐश

शायद यही वजह है कि जब-जब वे रेड कार्पेट पर या किसी इवेंट के लिए नजर आती हैं तो किसी को विश्वास ही नहीं होता कि वह जल्द ही उम्र के 50वें पड़ाव पर पहुंचने वाली हैं. उनको अपने माता-पिता से अच्छी स्किन और अच्छे बाल दोनों ही विरासत में मिले हैं. उनकी स्किन हमेशा सुंदर नजर आए, इसलिए वह बेहद हेल्दी लाइफ स्टाइल जीती हैं.

अंदरूनी खूबसूरती का राज

बाहरी खूबसूरती तभी नजर आती है जब शरीर अंदर से साफ हो. इसके लिए ऐश्वर्या खूब सारा पानी पीती हैं. ऐश्वर्या अपनी जवां त्वचा के लिए पानी को जिम्मेदार मानती हैं. वो कहती हैं कि खुद को अंदर से हाइड्रेट रखने से शरीर की सारी गंदगी बाहर निकल जाती है.

वॉक और पॉवर योग पर भरोसा

वह अपनी खूबसूरती के लिए घर में बने उबटन का इस्तेमाल करती हैं. वह अपनी त्वचा को खूबसूरत और निखरा हुआ रखने के लिए प्राकृतिक चीजों को मिलाकर बनाए गए उबटन का इस्तेमाल करती हैं. इस उबटन में बेसन, दूध और हल्दी का प्रयोग किया जाता है. इसके साथ ही वह बताती हैं कि त्वचा को माइश्चराइज रखने के लिए वो दही और खीरे के फेस मास्क का भी प्रयोग करती हैं. वह अपने चेहरे पर ग्लो के बारे में बता चुकी हैं. बॉलीवुड हीरोइनों की तरह आप उन्हें जिम के बाहर नहीं देखेंगे. वो खुद को फिट रखने के लिए वॉक और पॉवर योग पर भरोसा करती हैं. वैसे भी थोड़ी एक्सरसाइज और हेल्दी डाइट से कोई भी ग्लोइंग स्किन पा सकता है.

हेल्दी खाना

वह कहती हैं कि हम जैसा खाते हैं, उसका असर शरीर पर साफतौर पर पड़ता है. अपने आपको फिट और जवां रखने के लिए वो उबले हुए खाने को प्राथमिकता देती हैं. वह कभी भी तली-भुनी चीजें नहीं खाती हैं, न ही पिज्जा और बर्गर खाना उन्हें पसंद है. वह पैक्ड फूड पर भी ज्यादा भरोसा नहीं करतीं और केवल घर में पका साधारण खाना ही खाती हैं. एल्कोहॉल और स्मोकिंग से भी वह हमेशा दूर रहती हैं.

कड़ाके की ठंड का कहर

सीनियर्स को चाहिए स्पेशल केयर

कड़ाके की ठंड पड़ रही है. ऐसे मौसम में सभी को अपना विशेष ख्याल रखने की जरूरत होती है, लेकिन बुजुर्गों को सबसे ज्यादा ध्यान देने की सलाह दी जाती है, क्योंकि कई बार वे दूसरों पर निर्भर रहते हैं. इसलिए यदि घर में कोई बुजुर्ग सदस्य हैं तो इस मौसम में उन्हें स्पेशल केयर की दरकार होती है. चिकित्सकों के अनुसार ठंड लगना कोई बीमारी नहीं है, लेकिन एक लक्षण है जो किसी अन्य बीमारी का कारण बन सकता है. इस मौसम में ठंडी हवा या ठंडा पानी किसी को भी बीमार कर सकता है. ज्यादा उम्र होने पर शारीरिक क्षमता घट जाती है, हाथ-पैर तेजी से नहीं चलते हैं, इस कारण शरीर में कम गर्मी पैदा होती है.

सांस की परेशानी

बुजुर्गों को ठंड में होने वाली सबसे सामान्य समस्या है सांस की परेशानी. यदि यह पुरानी समस्या है तो ऑक्सीजन के अन्य विकल्प तैयार रखें. कमरे को पूरी तरह बंद न करें. आग या धुआं न करें. कमरे को गर्म रखना है तो इलेक्ट्रिक उपकरणों का इस्तेमाल करें. छाती और पीठ पर गर्म तेल की मालिश करने से राहत मिलती है. यदि बुजुर्ग को लगातार कंपकंपी बनी हुई है तो उनके शरीर को गर्म रखना जरूरी है. हथेलियों और पांव के तलवों की मालिश करें. उन्हें बार-बार ठंडे पानी के सम्पर्क में न आने दें.

खानपान का रखें ध्यान

सर्दियों में हार्ट का काम बढ़ जाता है क्योंकि रक्त गाढ़ा होने से रक्त कोशिकाएं सिकुड़ जाती हैं और हार्ट को ज्यादा पम्पिंग करनी पड़ती है. यही कारण है कि सर्दियों में हार्ट अटैक की आशंका भी ज्यादा रहती है. जिन बुजुर्गों में हार्ट संबंधी कोई बीमारी है, उनका खास ख्याल रखना जरूरी है. दवाएं सही समय पर दी जाएं और खानपान का पूरा ध्यान रखा जाए. कोशिश की जाए कि वे एक्टिव रहें.

त्वचा संबंधी रोग

सर्दी में बुजुर्गों में त्वचा संबंधी रोग ज्यादा होते हैं. त्वचा रूखी हो जाती है, जिसके कारण खुजली होती है. नारियल का तेल सबसे सही इलाज है. त्वचा की सफाई करना हो तो गुनगुने पानी का इस्तेमाल करें. धूप सेंकना त्वचा के लिए अच्छा है. इससे शरीर में गर्मी आती है, लेकिन जब तक तेज धूप न निकल जाए, बाहर जाने से बचना चाहिए. खुजली लंबे समय तक बनी रहे तो डॉक्टर से सम्पर्क करना चाहिए.

गर्म चीजें दें

प्रदूषण से बुजुर्गों को दूर रखें. जहां तक संभव हो, सुबह हल्का व्यायाम कराएं. इससे दिन भर शरीर में ऊर्जा बनी रहेगी. खाने में ठंड की तासीर वाली चीजें न दें. हल्दी, अदरक, तुलसी, काली मिर्च और केसर जैसी गर्म चीजें दें. पाचन का ध्यान रखना भी जरूरी है. कोई भारी चीज न खिलाएं.

कोरोना महामारी में रहें सजग

कोरोना महामारी में तो उनके स्वास्थ्य को लेकर ज्यादा सजग रहना और भी जरूरी हो गया है. इस मौसम में जहां सर्द हवाएं बुजुर्गों के लिए नुकसानदायक हो सकती हैं, वहीं वायरल व बैक्टीरियल और फंगल संक्रमण भी काफी खतरनाक हैं. इसके अलावा कोरोना महामारी में तो बुजुर्गों का और ज्यादा ध्यान रखे जाने की जरूरत है. ऐसे में उनकी स्वच्छता का ध्यान रखें. साथ ही बहुत जरूरी होने पर ही बाहर निकलें और जब भी बाहर जाएं तो मास्क आदि जरूर लगाएं.

आहार

कई समस्याओं से जूझ रहे बुजुर्गों को हड्डियों, जोड़ों और मांसपेशियों में दर्द आदि की समस्याएं बढ़ सकती हैं. ऐसे में उनके आहार का खास ख्याल रखें. उन्हें हलका और संतुलित आहार दें. ऐसा आहार जो पोषक तत्वों से भरपूर हो और उनके स्वास्थ्य के लिए बेहतर हो.

अपनों का साथ देगा खुशी

घर के बुजुर्गों को सही समय पर दवा देते रहें और डॉक्टर की सलाह पर समय-समय पर उनकी जांच आदि भी कराते रहें. उनकी ब्लडप्रेशर, ब्लड शुगर और दिल संबंधी जांच होती रहनी चाहिए. साथ ही उनसे बेहतर संबंध बनाए रखें. आपका प्यार भरा साथ उन्हें खुशी देगा और खुशी भरा माहौल पाकर ही वे अपनी शारीरिक दिक्कतों का सामना मजबूती से कर पाएंगे.

ज्ञानकथा

ईश्वर बड़ा है

बहुत समय पहले की बात है. किसी नगर में एक भिखारी रहता था. सुबह होते ही अपना चोंगा और कमंडल तैयार करता तथा निकल पड़ता. वह हर दरवाजे पर जाकर एक ही आवाज लगाता- 'देने वाला श्रीभगवान, हम सब हैं उसकी संतान.' भिखारी का नाम था कृपाल. उसे जो कुछ भी मिल जाता, वह उसी से संतुष्ट हो जाता. उसका एक मित्र जगन्नाथ भी भीख मांगता था. वह दरवाजे पर जाकर हांक लगाता- 'देने वाला है महाराज, यही दिलवाएगा भोजन आज.'

कृपाल और जगन्नाथ भीख मांगने के लिए राजा के महल में भी जाते थे. राजा प्रायः दोनों की आवाज सुनता था. वह दोनों को ही भीख देता था किंतु वह आजमाना चाहता था कि दोनों में से किसकी बात सच है? इंसान को सब कुछ देना, भगवान के हाथ में है या महाराज के हाथ में है?

एक दिन महाराज ने एक तरकीब निकाली. उन्होंने एक बड़ा-सा पपीता लिया. उसका एक टुकड़ा काटकर उसके भीतर सोने के सिक्के भर दिए. टुकड़े को ज्यों का त्यों जोड़ दिया. तभी कृपाल भीख मांगने आ पहुंचा. राजा ने उसे दाल-चावल दिलवाकर विदा किया. जगन्नाथ खंजड़ी बजाता आया और हांक लगाई- 'देने वाला है महाराज, वही दिलवाएगा भोजन आज.' महाराज ने सिक्कों से भरा हुआ वह पपीता उसके हवाले कर दिया. जगन्नाथ ने वह पपीता 2 आने में एक सब्जी वाले की दुकान पर बेच दिया. मिले हुए पैसों से उसने भोजन का जुगाड़ कर लिया. भला पपीता उसके किस काम आता?

थोड़ी देर बाद कृपाल सब्जी वाले की दुकान के आगे से निकला. उसने मीठी आवाज में अपनी बात दोहराई. सब्जी वाले ने वह पपीता उसे दे दिया. कृपाल उसे दुआएं देता हुआ घर लौट आया. घर आकर उसने पपीता काटा तो सिक्के देखकर वह आश्चर्यचकित हो उठा. उसने तुरंत सिक्के उठाए और सब्जी वाले के पास पहुंच गया. उसको सिक्के देकर कहा, 'भाई, यह तुम्हारे पपीते में से निकले हैं. इन पैसों से मेरा कोई लेना-देना नहीं है.' सब्जी वाला भी ईमानदार था. वह बोला, 'यह पपीता तो मुझे जगन्नाथ बेच गया था. तब तो यह सिक्के भी उसी के हैं.' जगन्नाथ ने सिक्के देखकर कहा, 'ये तो महाराज के हैं. वह पपीता मुझे भीख में वहीं से मिला था.' महाराज तीनों व्यक्तियों और सिक्कों को देखकर हैरान हो गए. सारी कहानी सुनकर उन्हें विश्वास हो गया कि इंसान को ईश्वर पर ही विश्वास करना चाहिए, वही सबको देने वाला है. राजा ने तीनों को यथायोग्य उपहार देकर विदा किया. हां, उसी दिन से कृपाल के साथ जगन्नाथ भी कहने लगा- 'देने वाला श्रीभगवान, हम सब उसकी हैं संतान'.

- भोला 'यामिनी'

देश में बढ़ते ओल्ड एज होम्स बुजुर्गों को लेकर हमारी टेंशन में आई कमी को साफ रिप्रेजेंट करते हैं. आज ही हेक्टिक लाइफ शेड्यूल में उन्हें क्वालिटी टाइम न दे पाना और उनसे उनकी मन की बात शेयर न कर पाने के चलते वे डिप्रेशन और नींद न आने जैसी प्रॉब्लम्स का शिकार हो जाते हैं. सारी जिंदगी जद्दोजेहद और अपने हिस्से की रिस्पॉन्सिबिलिटीज पूरी करने के बाद बुजुर्गों को प्यार और सम्मान की जरूरत होती है, जिसकी कमी से अल्जाइमर की प्रॉब्लम्स शुरू होती है. तो कैसे कम कर सकते हैं अल्जाइमर का खतरा, आइए जानें -

ऐसे कम करें अल्जाइमर का ख़तरा

हेल्थ ALERT

मेंटल हेल्थ कहीं न कहीं फिजिकल हेल्थ से भी जुड़ी रहती है इसलिए उनसे जुड़ी प्रॉब्लम्स में कॉम्प्लिकेशंस का रेट बढ़ जाता है. डायबिटीज, कॉन्स्टिपेशन, अर्थराइटिस, अल्जाइमर, इनसोम्निया वगैरह जैसी कई प्रॉब्लम्स बुजुर्गों की नॉर्मल लाइफ और सुकून में रुकावट खड़ी करते हैं. देश में ओल्ड एज होम्स की बढ़ती संख्या परेशान करने वाली बात है, जो बुजुर्गों को लेकर हमारे नजरिए और बिहेवियर में आए बदलावों को दिखाती है. जरूरी अटेंशन न मिल पाना और मन की बात शेयर न कर पाने के चलते वे डिप्रेशन और नींद न आने जैसी प्रॉब्लम्स का शिकार हो जाते हैं. स्ट्रेस से उनका शुगर लेवल इररेगुलर हो जाता है और लंबे वक्त तक बैठे रहने के चलते कॉन्स्टिपेशन भी एक आम शिकायत हो जाती है. वैसे यह केवल बुजुर्गों की नहीं, फैमिलीज की नहीं, बल्कि पूरे समाज की प्रॉब्लम है. इसकी मेन वजह जड़ों में पनपती इन्सेंसिटिविटी है. सारी जिंदगी जद्दोजेहद और अपने हिस्से की रिस्पॉन्सिबिलिटीज पूरी करने के बाद बुजुर्गों को प्यार और सम्मान की जरूरत होती है. जिसकी कमी से ये प्रॉब्लम्स शुरू होती है.

जरूर जाएं वॉक करने

ओल्ड एज होम में अक्सर लोग नींद न आने की शिकायत करते हैं. साउंड स्लीप फिजिकल और मेंटल, दोनों हेल्थ से जुड़ी है. अच्छी नींद बुजुर्गों की हेल्थ के लिए बहुत जरूरी है. इसके लिए प्राणायाम, योग, मेडिटेशन वगैरह का सहारा लिया जा सकता है, जिससे ब्लड सर्कुलेशन बेहतर होता है और थोड़ी थकान होने पर नींद अच्छी आती है. बुजुर्गों के लिए मॉर्निंग और इवनिंग वॉक या कोई फिजिकल एक्टिविटी जरूरी है. कार्डियक पेशेंट, हायपरटेंशन और डायबिटीज वालों को तड़के सुबह वॉक अवॉइड करनी चाहिए.

डाइट का है बहुत अहम रोल

उम्र बढ़ने पर फिजिकल चेंजेस के साथ बॉडी की जरूरत भी बदलती है. कुछ चीजों को बॉडी एडजस्ट कर लेती है और कुछ को रिपेल करना नेचुरल प्रोसेस है, इसलिए बुजुर्गों की डाइट उनकी बीमारी के मुताबिक बैलेंस्ड होनी चाहिए, जो उनके डाइजेशन को नॉर्मल रख सके. कार्डिएक और डायबिटीज पेशेंट को सैचुरेटेड फैट की कम और फाइबर वाली चीजों को प्रायोरिटी देनी चाहिए. लिक्विड और फ्रेश डाइट उनकी इच्छा के मुताबिक देनी चाहिए. यंग एज में आयुर्वेदिक लाइफस्टाइल फॉलो करने से उम्र बढ़ने पर बहुत आराम मिलता है. यंग एज में डाइट, योगासन, प्राणायाम और मेडिटेशन पर ध्यान देना लाइफटाइम इन्वेस्टमेंट साबित होता है, जिनका अच्छा रिटर्न मिलता है.

कोरोना महामारी में रहें सजग

कोरोना महामारी में तो उनके स्वास्थ्य को लेकर ज्यादा सजग रहना और भी जरूरी हो गया है. इस मौसम में जहां सर्द हवाएं बुजुर्गों के लिए नुकसानदायक हो सकती हैं, वहीं वायरल व बैक्टीरियल और फंगल संक्रमण भी काफी खतरनाक हैं. इसके अलावा कोरोना महामारी में तो बुजुर्गों का और ज्यादा ध्यान रखे जाने की जरूरत है. ऐसे में उनकी स्वच्छता का ध्यान रखें. साथ ही बहुत जरूरी होने पर ही बाहर निकलें और जब भी बाहर जाएं तो मास्क आदि जरूर लगाएं.

आहार

कई समस्याओं से जूझ रहे बुजुर्गों को हड्डियों, जोड़ों और मांसपेशियों में दर्द आदि की समस्याएं बढ़ सकती हैं. ऐसे में उनके आहार का खास ख्याल रखें. उन्हें हलका और संतुलित आहार दें. ऐसा आहार जो पोषक तत्वों से भरपूर हो और उनके स्वास्थ्य के लिए बेहतर हो.

अपनों का साथ देगा खुशी

घर के बुजुर्गों को सही समय पर दवा देते रहें और डॉक्टर की सलाह पर समय-समय पर उनकी जांच आदि भी कराते रहें. उनकी ब्लडप्रेशर, ब्लड शुगर और दिल संबंधी जांच होती रहनी चाहिए. साथ ही उनसे बेहतर संबंध बनाए रखें. आपका प्यार भरा साथ उन्हें खुशी देगा और खुशी भरा माहौल पाकर ही वे अपनी शारीरिक दिक्कतों का सामना मजबूती से कर पाएंगे.

बोधकथा

आलसियों का आश्रम

एक राज्य में बहुत सारे लोग आलसी हो गए. उन्होंने सारा काम-धाम करना छोड़ दिया. यहां तक कि अपने लिए खाना बनाना भी छोड़ दिया और खाने के लिए दूसरों पर निर्भर रहने लगे. ज्यादातर समय वे लेटे रहते या सोते रहते. खाने की समस्या का निराकरण जरूरी था क्योंकि इन आलसियों को खिलाने में लोग आनाकानी करने लगे. एक दिन सभी आलसियों ने राजा से मांग की कि सभी आलसियों के लिए एक आश्रम बनवाना चाहिए और उनके खाने की व्यवस्था करनी चाहिए. राजा नेक और दयालु होने के साथ बुद्धिमान था. उसने कुछ सोचकर मंत्री को एक आश्रम बनाने का आदेश दिया. आश्रम के तैयार होने पर सभी आलसी वहां जाकर खाने और सोने लगे. एक दिन राजा अपने मंत्री और कुछ सिपाहियों के साथ वहां आया और उसने एक सिपाही से कहकर आश्रम में आग लगवा दी. आश्रम को जलता देख आलसियों में भगदड़ मच गई और सभी जान बचाने के लिए आश्रम से दूर भाग गए. जलते हुए आश्रम में 2 आलसी अभी भी सोए हुए थे. एक को पीठ पर गर्मी महसूस हुई तो उसने पास ही में लेटे दूसरे आलसी से कहा, "मुझे पीठ पर गर्मी लग रही है, जरा देखो तो क्या माजरा है?"

"तुम दूसरी करवट लेट जाओ", दूसरे आलसी ने बिना आखें खोले ही उत्तर दिया. यह देखकर राजा ने अपने मंत्री से कहा, "केवल ये दोनों ही सच्चे आलसी हैं. इन्हें भरपूर सोने और खाने को दिया जाए. शेष सारे कामचोर हैं, उन्हें डंडे मार-मार कर काम पर लगाया जाए."

वैक्सीन से डरे बुजुर्ग ने गाया गाना बस आज की रात है ज़िंदगी...

सोशल VIRAL

छत्तीसगढ़ के जांजगीर-चाम्पा जिले के एक गांव में वैक्सीनेशन टीम पहुंची थी. टीकाकरण के दौरान टीका से बचने एक बुजुर्ग बच्चे की तरह भागने लगा. वैक्सीनेशन टीम ने बुजुर्ग को दौड़ाकर पकड़ लिया. पकड़ में ही आते ही बुजुर्ग जोर-जोर से 'बस आज की रात है जिंदगी, कल हम कहां तुम कहां' गाना गाने लगा. यह वीडियो सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रहा है. लोग इस वीडियो को शेयर कर रहे हैं.

महज 30% बुजुर्ग ही ले रहे वृद्धावस्था पेंशन योजना का लाभ

सरकारी सर्वे

शहरी बुजुर्गों की हिस्सेदारी कम

वृद्धावस्था पेंशन का लाभ उठा रहे बुजुर्गों में शहरी बुजुर्गों की हिस्सेदारी ग्रामीण बुजुर्गों से कम है. हालांकि यह योजनाएं गरीबी रेखा से नीचे के घरों के बुजुर्गों के लिए हैं, लेकिन वृद्धावस्था पेंशन का फायदा 18 फीसदी ऐसे पुरुष बुजुर्गों को हुआ जो गरीबी रेखा से ऊपर के घरों में रहते हैं. जबकि विधवा पेंशन का फायदा गैर-गरीब घरों की 16 फीसदी वृद्ध महिलाओं को मिला. वृद्धावस्था पेंशन के 30 फीसदी लाभार्थियों ने बताया कि पेंशन की राशि देर से मिली और 24 फीसदी ने बताया कि दस्तावेज प्रस्तुत करने में उन्हें परेशानी उठानी पड़ी.

5 फीसदी ही उठा पाए छूट का फायदा

रिपोर्ट के मुताबिक, सरकार द्वारा वरिष्ठ नागरिकों को प्रदान की गई विभिन्न प्रकार की छूट जैसे- ट्रेन, बस और विमान यात्रा में डिस्काउंट, बैंक अकाउंट खुलवाने और लोन लेने के लिए खास ब्याज दर और आयकर में कटौती के बारे में सिर्फ 28 फीसदी बुजुर्गों को पता है. सिर्फ 5 फीसदी वरिष्ठ नागरिक ऐसी छूट का फायदा उठा पाए हैं. शहरी इलाकों के तकरीबन 37 फीसदी बुजुर्गों ने कम से कम एक बार इन रियायतों का लाभ उठाया है, ग्रामीण इलाकों में यह आंकड़ा 25 फीसदी है. वहीं 33 फीसदी पुरुषों ने इसका लाभ उठाया, जबकि महिलाओं में ये आंकड़ा 24 फीसदी रहा. रिपोर्ट का कहना है कि इन रियायतों को लेकर जागरूकता और इनका फायदा उठाने के मामले में ग्रामीण वरिष्ठ नागरिक काफी पीछे हैं, लिहाजा गैर सरकारी संस्थाओं और पंचायत के माध्यम से ग्रामीण इलाकों में अभियान चलकर ग्रामीण वृद्धजनों को जागरूक करने में मदद मिल सकती है. रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि इन रियायतों का फायदा वे बुजुर्ग अधिक उठा रहे हैं जो आर्थिक रूप से बेहतर स्थिति में हैं, क्योंकि वे इस मामले में अधिक जागरूक हैं.

hillviewsamachar@gmail.com

हिलव्यू समाचार

08

जयपुर >> शुक्रवार, 07 जनवरी, 2022

एक नज़र

मुख्यमंत्री ने राजस्थान पुलिस विजन-2030 पुस्तक का विमोचन किया

जयपुर (हिलव्यू समाचार)। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने बुधवार को मुख्यमंत्री निवास पर राजस्थान पुलिस विजन-2030 पुस्तक का विमोचन किया। गहलोत ने कहा कि प्रदेश में कानून-व्यवस्था के सुदृढ़ीकरण और पुलिस के आधुनिकीकरण की दिशा में राज्य सरकार निरंतर नवाचार कर रही है, जिसके सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं। उन्होंने कहा कि वर्ष 2030 के विजन को लेकर प्रकाशित की गई यह पुस्तक पुलिस को और अधिक प्रतिबद्धता के साथ कार्य करने को प्रेरित करेगी। उन्होंने पुस्तक प्रकाशन के लिए गृह विभाग को बधाई दी। पुलिस महानिदेशक एमएल लाठर ने बताया कि इस पुस्तक में राजस्थान पुलिस को वर्तमान एवं भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करने एवं जनता को बेहतर पुलिसिंग देने के संबंध में विजन प्रस्तुत किया गया है। यह ऐसा दस्तावेज है जो आगामी वर्षों में पुलिस विभाग के व्यापक एवं समग्र विकास के लिए मार्गदर्शन प्रदान करेगा। इस अवसर पर शिक्षा मंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला, नगरीय विकास मंत्री शांति धारीवाल, वन एवं पर्यावरण मंत्री हेमाराम चौधरी, चिकित्सा मंत्री परसादीलाल मीणा, जलदाय मंत्री महेश जोशी, मुख्य सचिव निरंजन आर्य, प्रमुख शासन सचिव गृह अभय कुमार, महानिदेशक पुलिस इंटेलीजेंस उमेश मिश्र, अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस रेलवे संजय अग्रवाल, अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस आयोजना गोविंद गुप्ता, उप महानिरीक्षक कार्मिक गौरव श्रीवास्तव सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

सिंघवी ने की वित्तीय शक्तियाँ और मानदेय बढाने की माँग

हिलव्यू समाचार

छबड़ा। छबड़ा विधायक व पूर्व मंत्री प्रताप सिंह सिंघवी ने राज्य सरकार से नगर निगम, नगर परिषद व नगरपालिकाओं के मेयर, सभापति, अध्यक्षों की वित्तीय शक्तियां व अधिकार बढ़ाए जाने व पार्षदों के मानदेय में वृद्धि किए जाने की मांग की है। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र में शासन जनता का होता है और उसे जनता के लिए जनता के द्वारा संचालित किया जाता है। भारतीय संविधान सहभागी लोकतंत्र के सिद्धांत पर आधारित है। शासन व्यवस्था में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करने के लिए नागरिकों द्वारा चुनाव के माध्यम से प्रतिनिधि का चयन किया जाता है। संविधान की यह मान्यता है कि जनता के चुने हुए प्रतिनिधि की इच्छा व आकांक्षा के अनुरूप संविधान सम्मत शासन का संचालन व नीतियों का निर्धारण इस प्रकार हो कि प्रत्येक व्यक्ति को अधिकतम लाभ प्राप्त हो सके। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये शासन को हर स्तर पर जनता के प्रति जबावदेह होना आवश्यक है। सिंघवी ने कहा कि स्थानीय निकायों को सशक्त और मजबूत बनाने के लिए नगर निगम, नगर परिषद और नगरपालिकाओं के मेयर, सभापति, अध्यक्षों की वित्तीय शक्तियां व अधिकारों में सरकार को बढ़ोतरी करनी चाहिए साथ ही पार्षदों के मानदेय में वृद्धि की जानी चाहिए। नगर निगम, नगर परिषद और नगरपालिकाओं के कार्य व कर्तव्य नागरिकों से सीधे जुड़े हुए हैं।

'आदमखोर' कहानी संग्रह का विमोचन

जयपुर (हिलव्यू समाचार)। 'साहित्य एक यात्रा' साहित्यिक मंच के तत्वावधान में सोमवार दिनांक 27दिसम्बर 2021को जे.एल.एन. मार्ग स्थित कलानेरी आर्ट गैलरी में लेखिका आशा पाराशर के प्रथम कहानी संग्रह 'आदमखोर' का विमोचन समारोह वरिष्ठ साहित्यकार डॉ.शारदा कृष्ण की अध्यक्षता में आयोजित किया गया जिसमें मंचस्थ मुख्य अतिथि वरिष्ठ रंगकर्मी व लेखक डॉ.अशोक राही, विशिष्ट अतिथि हिन्दी प्रचार प्रसार संस्थान, राजस्थान के अध्यक्ष डॉ.अखिल शुक्ला, मुख्य वक्ता और समीक्षक के रूप में वरिष्ठ साहित्यकार व समीक्षक डॉ.आशा शर्मा, अतिविशिष्ट अतिथि डॉ.अमला बत्रा तथा 'साहित्य एक यात्रा' मंच की अध्यक्षा कल्पना गोयल ने पुस्तक का लोकार्पण किया।संगीता गुप्ता की स्वरचित सरस्वती वंदना एवम दीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ हुआ।

इस अवसर पर डॉ.अशोक राही ने संग्रह की कहानियों पर अपने विचार व्यक्त किए किए तथा डॉ .अखिल शुक्ला ने अपने वक्तव्य में बताया कि कहानी संग्रह की हर कहानी प्रेरणा देने के साथ ही समाज का पथ प्रशस्त करने का दायित्व भी वहन करती है। मुख्य वक्ता व समीक्षक डॉ.आशा शर्मा ने संग्रह की सभी कहानियों के कथ्य और शिल्प पर प्रकाश डालते हुए उनकी विस्तृत व्याख्या की। लेखिका आशा पाराशर ने अपने लेखकीय वक्तव्य में अपनी रचना प्रक्रिया के बारे में बताया कि उन्होंने अपनी कहानियों में इन्सानी मुखौटों के पीछे छुपे हुई मनोवृत्तियों को ईमानदारीसे उकेरने का प्रयास किया है तथा उनकी अधिकांश रचनाओं के पात्र मध्यमवर्गीय हैं। 'साहित्य एक यात्रा' मंच की अध्यक्षा कल्पना गोयल ने संस्था के उद्देश्यों व कार्यों पर प्रकाश डालते हुए पूर्व में आयोजित लघुकथा प्रतियोगिता के परिणाम घोषित किए।

अन्त में कार्यक्रम की अध्यक्षा डॉ.शारदा कृष्ण ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि लेखिका ने समाज के ज्वलंत मुद्दों को अपनी कहानियों का विषय बनाया है। कार्यक्रम का संचालन कविता मुखर द्वारा किया गया।

राज्यपाल मिश्र ने किया जैन संतों का स्वागत

नेपाल-भूटान होकर जयपुर के राजभवन पहुंची अहिंसा यात्रा, कलराज मिश्र बोले...आचार्यश्री महाश्रमण से मुलाक़ात सौभाग्य है

जयपुर(हिलव्यू समाचार)। श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ की अहिंसा यात्रा आज राजभवन पहुंची। राज्यपाल कलराज मिश्र ने आचार्यश्री महाश्रमण और संतों का राजभवन में स्वागत किया। राज्यपाल कलराज मिश्र ने कहा कि संतों की संगत मिलना सौभाग्य की बात होती है। उन्होंने कहा कि लोगों को सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति का संकल्प दिलाने के लिए आचार्यश्री की प्रेरणा से निकाली जा रही अहिंसा यात्रा की पहल सराहनीय है। राज्यपाल ने आचार्यश्री को अपनी पुस्तक 'संविधान, संस्कृति और राष्ट्र' के साथ ही दो साल के कार्यकाल की पुस्तक 'सर्वांगीण विकास की नई राह' की कॉपी भेंट की।

2014 से चल रही है अहिंसा यात्राः आचार्यश्री महाश्रमण ने बताया कि दिल्ली के लाल किले से 9 नवम्बर 2014 से शुरू हुई अहिंसा यात्रा नेपाल, भूटान और भारत के 20 से ज्यादा राज्यों से होती हुई राजस्थान पहुंची है। दिल्ली जाकर यह यात्रा पूरी होगी। जयपुर प्रवास के दौरान जैन संत धर्मसभा और फेरियां निकाल रहे हैं। जिसमें लोगों को अणुव्रत रखने, भोग और रोग से बचने के लिए योग की ओर बढ़ने, आत्मा का कल्याण करने का संदेश दे रहे हैं। अणुव्रत का मतलब छोटे-छोटे नियमों के जरिए भोगों पर कंट्रोल किया जाए और मन को साफ रखने की कोशिश की जाए।

1 करोड़ से ज्यादा लोगों को नशामुक्ति का दिलाया संकल्पः आचार्यश्री ने अब तक 50 हजार किमी से ज्यादा की पदयात्रा की है। उनकी प्रेरणा से 1 करोड़ से ज्यादा लोग नशामुक्ति का संकल्प ले चुके हैं। अहिंसा पदयात्रा के जरिए वे 15 हजार किलोमीटर पैदल चल चुके हैं। अहिंसा यात्रा के तीन मुख्य उद्देश्यों में सदभावना,नैतिकता और नशामुक्ति अभियान शामिल हैं। इसमें किसी भी धर्म-जाति, वर्ग, संप्रदाय का व्यक्ति अहिंसा हिस्सा ले सकता है। वह यात्रा में दो रूपों में जुड़ सकता है। वह खुद अहिंसा यात्रा के संकल्प ले। साथ ही दूसरों को अहिंसा यात्रा के संकल्प स्वीकार करने के लिए मोटिवेट करे। इस अहिंसा यात्रा पर नेपाल सरकार की ओर से डाक टिकट भी जारी किया जा चुका है।

आचार्य श्री महाश्रमण मुख्यमंत्री निवास पहुंचे, मुख्यमंत्री ने अगवानी कर लिया आशीर्वाद

जयपुर (हिलव्यू समाचार)। जैन आचार्य श्री महाश्रमणजी गुरूवार को मुख्यमंत्री निवास पहुंचे। यहां मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने धर्मपत्नी श्रीमती सुनीता गहलोत के साथ आचार्य की अगवानी की और उन्हें नमन कर आशीर्वाद लिया। गहलोत ने आचार्य श्री से आध्यात्मिक चर्चा करने के साथ ही देश-दुनिया में अहिंसा, शांति, सौहार्द और सदभाव जैसे नैतिक मूल्यों के प्रसार और युवा पीढ़ी को इससे जोड़ने पर विचार-विमर्श किया। मुख्यमंत्री ने उनसे इन विषयों पर मार्गदर्शन प्राप्त किया। मुख्यमंत्री ने आचार्य श्री महाश्रमण से चर्चा के दौरान कहा कि राज्य में सदभाव, अहिंसा एवं भाईचारा बना रहे, इसके लिए राज्य सरकार निरंतर प्रयासरत है। इन्ही सिद्धांतों के अनुरूप प्रदेश में शांति एवं अहिंसा निदेशालय की स्थापना की गई है। उल्लेखनीय है कि आचार्य श्री महाश्रमण अपनी अहिंसा यात्रा पर नेपाल, भूटान और देश के कई राज्यों से होते हुए जयपुर पहुंचे हैं। वे अब तक करीब 51 हजार किलोमीटर की पदयात्रा पूरी कर चुके हैं। यात्रा के माध्यम से नशामुक्ति, सदभावना और नैतिकता का संदेश दिया जा रहा है। अब तक इस यात्रा के माध्यम से आचार्य श्री ने करीब एक करोड़ लोगों को नशामुक्ति का संकल्प दिलाया है। इस अवसर पर आचार्य श्री के साथ अन्य सहवर्ती संत, श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ महासभा एवं तेरापंथ युवक परिषद सहित श्वेताम्बर तेरापंथ समाज की अन्य संस्थाओं के पदाधिकारी, सदस्य तथा श्रद्धालु भी मुख्यमंत्री निवास पहुंचे।

आबू पर्वत नगर पालिका के शरद महोत्सव-2021

माउण्ट आबू का हो योजनाबद्ध विकास : मुख्यमंत्री गहलोत

हिलव्यू समाचार

जयपुर। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा कि माउण्ट आबू राजस्थान का एक मात्र हिल स्टेशन है। इसके योजनाबद्ध विकास के लिए पर्यटन विभाग और स्वायत्त शासन विभाग प्लानिंग करें, ताकि इस क्षेत्र को पर्यटकों के लिए अधिक सुविधाजनक और आकर्षक बनाया जा सके। उन्होंने निर्देश दिए कि माउण्ट आबू विकास समिति की बैठक नियमित रूप से आयोजित की जाए।

गहलोत मुख्यमंत्री निवास से वीसी के माध्यम से आबू पर्वत नगर पालिका के शरद महोत्सव-2021 के उद्घाटन तथा लोकार्पण एवं शिलान्यास कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री ने माउण्ट आबू की प्रसिद्ध नक्की झील पर गांधी वाटिका में गांधीजी की प्रतिमा का अनावरण तथा महात्मा गांधी पुस्तकालय का उद्घाटन किया। गहलोत ने झील के किचन गार्डन पर पार्किंग एवं टेरेस गार्डन का शिलान्यास भी किया। उन्होंने निर्देश दिए कि करीब तीस साल से मनाए जा रहे शरद महोत्सव को और भी आकर्षक एवं वृहद स्तर पर आयोजित किया जाए। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश में पर्यटन और इससे जुड़ी हुई गतिविधियों को बढ़ावा देना राज्य सरकार की प्राथमिकता है। इस दिशा में पूरी प्रतिबद्धता के साथ काम किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि पर्यटन से बड़ी संख्या में लोगों की आजीविका जुड़ी हुई है। इसे देखते हुए राज्य सरकार विभिन्न योजनाओं के माध्यम से पर्यटन उद्योगों को प्रोत्साहित कर रही है। उन्होंने कहा कि राजस्थान को पर्यटन के क्षेत्र में नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने के लिए पहली बार 500 करोड़ रूपए का पर्यटन विकास कोष बनाया गया है। इस कोष से पर्यटक स्थलों पर आधारभूत सुविधाओं के विकास, उनके संरक्षण तथा राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मजबूत ब्रांडिंग जैसे कार्य किए जाएंगे।

स्वायत्त शासन मंत्री शांति धारीवाल ने कहा कि मुख्यमंत्री की मंशा के अनुरूप प्रदेश के एक मात्र हिल स्टेशन माउण्ट आबू के सुनियोजित विकास के लिए विभाग पूरी तत्परता से कार्य करेगा। उन्होंने कहा कि इंदिरा रसोई योजना तथा इंदिरा गांधी शहरी क्रेडिट कार्ड योजना से गरीब एवं जरूरतमंद लोगों को बड़ा लाभ मिल रहा है। उन्होंने मुख्यमंत्री के ''कोई सफाईकर्मी मैला न ढोए'' के संकल्प को साकार करने के लिए नगरीय संस्थाओं द्वारा सीवरेज मशीनों की खरीद एवं बजट घोषणाओं की क्रियान्विति की जानकारी दी। पर्यटन मंत्री विश्वेन्द्र सिंह ने कहा कि पर्यटन के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियों के लिए राजस्थान को इंडिया टूडे ट्यूरिज्म अवार्ड 2021 में बेस्ट आईकोनिक लैंडस्केप डेस्टीनेशन अवार्ड, बेस्ट फेस्टीवल डेस्टीनेशन अवार्ड और ट्रेवल एण्ड लीजर इंडियाज बेस्ट अवार्डस् 2021 में सर्वश्रेष्ठ राज्य के साथ सर्वश्रेष्ठ वेडिंग डेस्टीनेशन अवार्ड और कोन्डेनास्ट ट्रेवलर अवार्ड-2021 में बेस्ट इंडियन स्टेट फॉर रोड ट्रिप एवं रनरअप बेस्ट लेजर डेस्टिनेशन अवार्ड मिले हैं। यह दर्शाता है कि राज्य सरकार पर्यटन विकास के लिए समर्पित भाव से कार्य कर रही है।

सीएम अशोक गहलोत ने गैर वाजिब मांगों पर आंदोलन करने वालों पर कसा निशाना

आपने ट्विटर पर मेरे ख़िलाफ अभियान चलाया, लेकिन हमने अन्यथा नहीं लिया

हिलव्यू समाचार

जयपुर। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने गुरुवार को प्रशिक्षु आरएएस के कार्यक्रम में अपने चिर-परिचित अंदाज में चुटकी लेते हुए कहा कि आपने मेरे ख़िलाफ ट्विटर पर मोर्चा खोला, लेकिन इससे मैं नाराज़ नहीं हुआ। हर किसी को अपनी बात और मांग रखने का अधिकार है। इसमें कुछ गलत नहीं है। लेकिन जो काम हो नहीं सकता, उसके लिए आंदोलन करना ठीक नहीं है। गहलोत गुरुवार को राजस्थान राज्य सेवाओं के आधारभूत प्रशिक्षण कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। गहलोत ने कहा कि आप पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी आने जा रही है। हमारा प्रयास है कि नियुक्ति के लिए कैम्पेन नहीं चलाना पड़े। भर्ती परीक्षाओं में देरी होती है सभी को दुख होता है। आपको सभी वर्गों को साथ लेकर चलना होगा। ईमानदार रहेंगे तो पब्लिक आपका साथ देगी।

कुछ लोग बेरोजगार संघ बना गैर वाजिब मांग कर रहे हैंः अशोक गहलोत ने कहा कि सरकार ने एक लाख युवाओं को नौकरी दी। एक लाख को देने जा रहे हैं। फिर भी धरने प्रदर्शन हो रहे हैं। लोकतंत्र में सबको अपनी बात रखने का अधिकार है। गहलोत ने बेरोजगार संगठनों पर निशाना साधते हुए कहा कि कुछ लोग बेरोजगार संघ बना लेते हैं। फिर मांग करते है कि रीट पद तीस से पचास हजार किए जाए। सुप्रीम कोर्ट के निर्देश पर तीस हजार पदों की भर्ती निकाली है। हम चाहते हैं कि समय पर भर्ती परीक्षा हो। परिणाम समय पर आए। लेकिन नकल गैंग बन गई है। इससे व्यवस्था पर प्रभाव पड़ रहा है। ऐसी गतिविधियां बढने से परीक्षार्थियों में कॉन्फिडेंस खत्म होता है। सरकार इन गतिविधियों को खत्म करने में लगी है।

जिंदगी में पैसा ही सब कुछ नहीं हैः कार्यक्रम में अशोक गहलोत ने धर्म की राजनीति पर कहा कि देश का माहौल बदल रहा है। सामाजिक मूल्यों में गिरावट आ रही है। पाकिस्तान व हिंदुस्तान एक साथ आजाद हुए। हिंदुस्तान आत्मनिर्भर बन गया। लेकिन धर्म की राजनीति में पाकिस्तान बर्बाद है। वहां बार-बार सैनिक शासन लगता रहता है। गहलोत ने कहा कि अधिकारी अपनी प्रशासनिक क्षमता का उपयोग करें। दुर्भाग्य से कुछ लोग पैसा कमाने को तरजीह देने लग जाते हैं, लेकिन ज़िंदगी में पैसा ही सब कुछ नहीं है। कोरोना ने भी यह समझा दिया। अच्छे अच्छे पैसे वालों को अस्पतालों में बेड नहीं मिले। कार्यक्रम के बाद गहलोत प्रशिक्षु राज्य सेवा के अधिकारियों से मिले। सभी अधिकारी सीएम के साथ सेल्फी लेते रहे।

आपका व्यक्तित्व एक खुली किताब की तरहः मुख्य सचिव निरंजन आर्य ने राज्य सेवाओं में प्रविष्ट हो रहे सभी अधिकारियों से कहा कि इस समय आपका व्यक्तित्व एक खुली किताब की तरह है। यहां जो सीख मिलेगी वह पूरे सेवाकाल में साथ चलेगी। उन्होंने कहा कि अधिकारी के रूप में हम सभी को समाज में हो रहे बदलावों और सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरूप निर्णय करने होते हैं।

जयपुर में मदरसा पैरा टीचर्स पर लाठीचार्ज

जयपुर (हिलव्यू समाचार)। परमानेंट करने की मांग को लेकर आंदोलन कर रहे मदरसा पैरा टीचर्स की गुरुवार को पुलिस से झड़प हो गई। जयपुर के शहीद स्मारक पर धरने पर बैठे पैरा टीचर्स दिल्ली की ओर कूच करना चाह रहे थे। पुलिस ने उन्हें शहीद स्मारक पर ही रोक लिया। आक्रोशित पैरा टीचर्स ने पुलिस का विरोध शुरू कर दिया, जो हंगामे में बदल गया। हंगामा बढ़ता देख पुलिस ने लाठीचार्ज किया, जिसमें कुछ पैरा टीचर्स को चोटें आई हैं। मदरसा पैरा टीचर्स संयुक्त मोर्चे के संरक्षक शमशेर भालू खान ने बताया कि सरकार ने हमें नियमित करने का वादा किया था। 2 महीने से ज्यादा वक्त बीत जाने के बाद भी सरकार ने अपना वादा पूरा नहीं किया। ऐसे में हमने दिल्ली जाकर कांग्रेस मुख्यालय में धरना देने की तैयारी कर रखी थी। राजस्थान की कांग्रेस सरकार ने हमें जबरदस्ती जयपुर में ही रोक लिया है। जो सरासर गलत है ख़ान ने बताया कि हमारा आंदोलन जारी रहेगा।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, एवं मुद्रक **रिज़वान एजाज़ी के लिए** अम्बर ऑफसेट प्राइवेट लिमिटेड, डी.एल. टॉवर, 3-ए, विद्याश्रम संस्थानिक क्षेत्र, जेएलएन मार्ग, जयपुर में मुद्रित एवं महिमा क्लासिक 601, बी-84, रमन मार्ग, तिलक नगर, जयपुर (राज.) से प्रकाशित।
संपादक : शालिनी श्रीवास्तव, फोन : 0141-2620340 मो.: 9460678701, 7976561127 (21 जून 2014 से निरन्तर प्रकाशित) **hillviewsamachar@gmail.com**